देहरादून,पौड़ी-गढ़वाल व अल्मोड़ा से प्रकाशित

www.page3news.in

नगर संस्करण वर्ष 16 अंक: 140 पृष्ठ : 8 मूल्य: एक रूपए

देहरादून, शुक्रवार 03 सितम्बर 2021

इंदौर सहित 19 जगह सीबीआई छापे

पेज थ्री

हर्बल कॉस्मेटिक: त्वचा के साथ संभाले करियर

मौसम अधिकतम 19.0° न्यूनतम 6.0°

36254.57 2 आत्मनिर्भरता की राह में नौकरशाही की अड़चन 7 कश्मीर में अब नहीं आएगा दूसरा गिलानी

मसूरी रोड पर भूस्खलन के उपचार में खर्च होंगे चार करोड़

देहरादून (सू. वि.) A मसूरी रोड पर ग्लोगी पावर हाउस के पास भूस्खलन जोन पिछले कई सालों से सिरदर्द बना है। इस मानसून सीजन में भी यहां की पहाड़ी से निरंतर भूस्खलन हो रहा है।

पर्यटन नगरी मसूरी को जोड़ने वाले मार्ग की अहमियत को देखते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गुरुवार को भूस्खलन जोन का जायजा लिया।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि पहाड़ी के उपचार के लिए हरसंभव आधुनिक तकनीक पर काम किया जाए।

मुख्यमंत्री के निरीक्षण के दौरान लोक निर्माण विभाग (लोनिवि) के मुख्य अभियंता एनपी सिंह ने बताया कि पहाड़ी के 8 मीटर लंबाई व 1 मीटर ऊंचाई के हिस्से से निरंतर भूस्खलन हो रहा है। इतने बड़े क्षेत्र के उपचार के लिए विशेष प्रयास करने होंगे।

उन्होंने बताया कि कुछ समय पहले विभाग के भूविज्ञानियों की टीम ने भूस्खलन जोन का सर्वे किया था। जिसमें बताया गया कि यहां पर सुरक्षा दीवार निर्माण जैसे उपाय कारगर नहीं हो सकते हैं। हालांकि, उन्होंने जानकारी दी कि उच्च तकनीक वाली नेलिंग/राक बोल्टिंग, जाल निर्माण आदि माध्यमों से पहाड़ी को सुदृढ़ किया जा सकता है। एक अनुमान के मुताबिक, इस काम में चार करोड़ रुपये से अधिक खर्च आ सकता है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि जिस भी तकनीक से भूस्खलन रुक सकता है, उस पर तुरंत कार्रवाई की जाए। विभाग के प्रस्ताव को शीघ्र मंजूरी दी जाएगी।

पहाड़ी के बीच से फूट रहा जलस्त्रोत

लोनिवि अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को बताया कि ग्लोगी पावर हाउस के पास की पहाड़ी के बीच से जलस्त्रोत भी फूट रहा है। मानसून सीजन में यहां से अधिक पानी निकलता है। यह भी वजह है कि बारिश के दौरान भूस्खलन रफ्तार पकड़ लेता है।

मुख्यमंत्री के निर्देश पर लोनिवि ने कंसल्टेंट की नियुक्ति की तैयारी शुरू कर दी है। जो भूस्खलन की प्रकृति व भौगोलिक स्थिति के मुताबिक उपचार के लिए डिजाइन तैयार करेगा।

मुनस्यारी में धंसी भूमि, खतरे में 13 मकान, गांव में दहशत

मुनस्यारी (संवाददाता) A मानसून काल समाप्ति पर है। पिछले 76 घंटे से बारिश के वेग में कमी आई है परंतु जाते -जाते मानसून जख्म देना नजर आ रहा है। जुम्मा गांव की

आपदा के जख्म हरे ही हैं और अब मुनस्यारी से बड़े गांवों में शामिल सैणरांथी के खेता तोक की भूमि में साठ मीटर से अधिक लंबी और एक से डेढ़ फीट चौड़ी दरार पड़ चुकी है। गांव की भूमि में दरार पड़ते ही गांव में दहशत बनी है। जमीन धंस रही है। तीन ग्राम पंचायतों वाले सैणरांथी में तेरह परिवार खतरे में आ चुके हैं। सात परिवारों को सुरक्षित स्थान पर रखा गया है और अन्य परिवारों को भी सुरक्षित स्थानों पर रखने की प्रक्रिया जारी है।

मुनस्यारी क्षेत्र में दो दिन पूर्व तक भारी बारिश हो रही थी। दो दिनों से

बारिश कम होने लगी है। इसी बीच क्वीटी से लगभग आठ किमी की दूरी पर स्थित सैणरांथी गांव में प्रकृति की चेतावनी सामने आई है। सैणरांथी गांव के खेता तोक में भूमि पर लंबी और एक से दो फीट चौड़ी दरारें पड़ चुकी हैं। मकानों वाली भूमि पर भी दरार पड़ चुकी है। कुछ मकान दरार के निचले तो कुछ ऊपरी हिस्से में हैं। दरार के दोनों तरफ मकान हैं। ग्रामीणों द्वारा इसकी सूचना तहसील प्रशासन को दी गई है। गुरुवार सुबह जब ग्रामीण जाग कर घरों से बाहर निकले तो गांव की भूमि में दरार नजर आई। दरार देखते ही तीन ग्राम पंचायतों वाले सैणरांथी में हलचल मच गई । शेर सिंह, हरमल सिंह, गंगा सिंह, शेर सिंह द्वितीय, कुं वर सिंह, प्रेम सिंह ग्राम पंचायत बेडू महर, पुष्पा देवी, लाल सिंह, त्रिलोक राम, सूर सिंह, नंदन सिंह, गोपाल सिंह, लक्ष्मण सिंह ग्राम पंचायत सैणरांथी।

मौके पर पटवारी के साथ पंचायत प्रतिनिधि जगदीश मेहता निधि मेहता,गुलशन मेहता, इंद्र सिंह और नरेंद्र सिंह आदि मौजूद हैं। सात परिवारों में रहने वाले अस्सी लोगों को सुरक्षित स्थानों पर रखा गया है। ग्रामीणों ने प्रशासन से शीघ्र सुरक्षात्मक कदम उठाने की मांग की है।

सैणरांथी मुनस्यारी विकास खंड का सबसे अधिक आबादी वाला क्षेत्र है। यहां पर तीन ग्राम पंयायत रांथी, बेडूमहर और किमखेत हैं। इसे सैणरांथी के नाम से जाना जाता है। गांव के निचले हिस्से में रांथी गांव है यहां पर समतल होने से इस स्थान को सैणरांथी कहा जाता है।

शिक्षक पति की हत्या में पत्नी व उसके प्रेमी पुलिसकर्मी को आजीवन कारावास

देहरादून (संवाददाता) A शिक्षक पति की हत्या के मामले में अपर जिला जज चतुर्थ चंद्रमणि राय की अदालत ने मृतक की पत्नी व उसके प्रेमी को उम्रकैद और 35-35 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है। महिला अपने पति से इतनी नफरत करती थी कि घटना के बाद उसने अपनी जेठानी को फोन कर कहा कि उसने एक राक्षस को मरवा दिया है। इस मामले में कोर्ट ने आरोपितों को 31 अगस्त को दोषी माना था। सजा पर फैसला गुरुवार को हुआ।

15 जून, 218 की रात पुलिस को रिंग रोड स्थित कृषि भवन के पास एक कार में व्यक्ति का शव मिला था। दूसरे दिन शव की पहचान शिक्षक किशोर चौहान निवासी रायपुर के रूप में हुई। रायपुर थाना पुलिस ने 16 जून, 218 को मृतक के भाई डालनवाला निवासी आनंद सिंह चौहान की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था। शासकीय अधिवक्ता जेके जोशी ने बताया कि किशोर चौहान देवप्रयाग स्थित राजकीय इंटर कालेज, सजवाण काडा में शिक्षक थे। कार से शराब की बोतलें भी बरामद हुई थीं। शुरुआत में पुलिस यह मान कर चल रही थी कि अधिक शराब पीने के कारण शिक्षक की मौत हुई है, लेकिन पोस्टमार्टम रिपोर्ट में पता चला कि शिक्षक की गला घोंटकर हत्या की गई है।

ऐसे में पुलिस ने जांच की तो आराघर के पास सीसीटीवी फुटेज में दिखा कि उनकी कार में एक व्यक्ति बैठा हुआ था। पुलिस ने 17 जून 218 को सीसीटीवी फुटेज व काल डिटेल के आधार पर हत्या के आरोप में किशोर चौहान की पत्नी स्नेहलता और उसके प्रेमी हरिद्वार में तैनात पुलिस सिपाही अमित पार्ले को गिरफ्तार कर लिया। स्नेहलता राजकीय इंटर कालेज, शिवालीधार में गणित की अध्यापिका थी। पूछताछ में स्नेहलता ने बताया कि वह अमित पार्ले को पहले से जानती थी और दोनों के बीच प्रेम संबंध थे। वह एक बार देहरादून के एक होटल में भी ठहरे थे। पति को रास्ते से हटाने के लिए उनकी हत्या अमित के हाथों कराई।

इसके लिए दोनों ने फोन पर बात कर योजना बनाई और 15 जून, 218 को कार में सवार हो गए। आराघर के पास स्नेहलता तो गाड़ी से उतर गई, लेकिन अमित शराब पीने के लिए किशोर चौहान के साथ रिंग रोड तक गया। यहां जब किशोर को ज्यादा नशा चढ़ गया तो अमित ने गला दबाकर उनकी हत्या कर दी।

विधायक महेश नेगी प्रकरण में पीड़िता ने की डीएनए जांच की मांग

देहरादून (संवाददाता) A उत्तराखंड में द्वाराहाट विधायक महेश नेगी पर दुष्कर्म का आरोप लगाने वाली महिला ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से शिकायत की है। पीड़िता ने कहा है कि विधायक डीएनए जांच नहीं करा रहे हैं। जबकि, पार्टी के कई नेता उनकी तरफ से यह बयान दे चुके हैं कि विधायक हर प्रकार की जांच के लिए तैयार हैं। उन्होंने मुकदमे की जांच में तेजी लाने की मांग भी की है।

सम्पादकीय

नाशक नशा

बॉलीवुड में नशे के किस्से नये नहीं हैं। जब तब नशीली पार्टियों व रेव पार्टियों की खबरें आती रही हैं। मायानगरी की चकाचौंध और निरंकुश जीवन व्यवहार इसके मूल में रहा है। अथाह पैसा और ग्लैमर का गुमान भी वैसे नशे से कम नहीं होता। कई रहस्यमय हत्याओं व आत्महत्याओं से नशे के तार जुड़ते रहे हैं। युवा सितारे सुशांत राजपूत की रहस्यमय मौत के घटनाक्रम ने पूरे देश को उद्वेलित किया। जमकर राजनीति भी हुई और टीआरपी का निर्लज्ज खेल भी। फिर अचानक कैमरा नशे के संजाल की तरफ मुड़ गया या यूं कहें मोड़ दिया गया। सवाल उठने लगे कि सुशांत कांड से पर्दा उठाने का दायित्व सीबीआई को सौंपा गया था तो कहानी में अचानक नशे का ट्विस्ट कैसे आ गया अब सुशांत कांड तो पार्श्व में चला गया और नशे के बुलबुले फूटने लगे। सवाल यह भी कि सीबीआई सुशांत मामले की जांच में कहां तक पहुंची है क्यों इस मामले से ध्यान हटाकर सिने-तारिकाओं को एनसीबी के समन देने की ओर केंद्रित हो गया यह अच्छी बात है कि नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो नशे के संजाल से आवरण हटाने का प्रयास कर रहा है मगर सामने जो लोग आ रहे हैं, वे तो छोटी मछलियां हैं। एनसीबी की सफलता तब मानी जायेगी जब नशे के कारोबार के असली खिलाड़ियों के गिरेबान तक हाथ पहुंचेगा। जब तक इस खेल के असली खिलाड़ी बेनकाब नहीं होंगे तब तक नशे का संजाल उलझता ही रहेगा। इस प्रकरण से जुड़ी छोटी-बड़ी खबरों का कार्रवाई से पहले बाहर आना और इलेक्ट्रानिक मीडिया द्वारा जोरदार ढंग से इसे प्रचारित करना भी चौंकाता है। ऐसे वक्त में जब कोविड संकट भयावह स्थिति में है और चीन एलएसी पर देश की सेना को उलझाये हुए है तो बॉलीवुड के नशे को इतना महत्व देने का आखिर क्या औचित्य है कृषि सुधार और उससे जुड़े विरोध को कोई तार्किक दिशा देने की भी कोई गंभीर कोशिश होती नजर नहीं आई। निस्संदेह यह गैरजिम्मेदार व्यवहार हमारी चिंता का विषय होना चाहिए। निस्संदेह बॉलीवुड में नशे की दलदल का गहरा होना हमारी चिंता का विषय होना चाहिए। इसकी एक वजह यह भी है कि देश में करोड़ों युवा इन अभिनेताओं-अभिनेत्रियों को अपने जीवन का नायक मानते हैं। जाहिरा

आत्मनिर्भरता की राह में नौकरशाही की अड़चन

भरत झुनझुनवाला

वर्तमान में विश्व बाजार में चीन के प्रति गहरी नाराजगी देखा जा रही है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां चीन को छोड़ रही हैं और तमाम देश चीन में बने माल को आयात करने से हिचक रहे हैं। हम इस स्थिति का लाभ उठा सकते हैं, लेकिन इसके लिए हमें थाईलैंड, वियतनाम जैसे देशों का सामना करना होगा। हमें इन देशों की तुलना में भी सस्ता माल बनाकर आपूर्ति के लिए तैयार रहना होगा।

इस दिशा में सरकार ने आत्मनिर्भर भारत के तहत एक विशाल पैकेज जारी किया, जिसका मुख्य केंद्र ऋण उपलब्ध कराना है। यहां पर प्रश्न यह है कि यदि बाजार में मांग ही नहीं होगी तो ऋण का क्या अर्थ? ऋण की सार्थकता तो तभी होती है, जब बाजार में मांग हो। यदि उस मांग की आपूर्ति के लिए उद्यमी के पास निवेश करने की क्षमता न हो तो ऋण लेकर निवेश करने की सार्थकता है, लेकिन इस समय बाजार में मांग ही नहीं है। भारत समेत संपूर्ण विश्व बाजार में तमाम उद्योग कोविड-19 संकट के कारण बंद हो रहे हैं। इस परिस्थिति में ऋण देना उद्योगों को और अधिक संकट में डालेगा। 1 करोड़ रुपये के ऋण के भार से दिवालिया होने के स्थान पर उद्यमी 15 करोड़ रुपये के ऋण के भार से दिवालिया होंगे। इस नीति का एक विकल्प यह बताया जा रहा है कि सरकार सीधे उपभोक्ताओं को नकद सब्सिडी दे, जिससे बाजार में मांग बने। यह रणनीति इस हद तक सही है कि बाजार में इससे तत्काल मांग बनेगी, लेकिन समस्या यह है कि यदि हमारा बाजार विश्व बाजार से जुड़ा रहा तो इस मांग की आपूर्ति अपने देश के उत्पादन द्वारा न होकर थाईलैंड, वियतनाम जैसे देशों में बने माल से होगी। इससे सरकार के ऊपर ऋण चढ़ जाएगा, क्योंकि उसे इस रकम को देने के लिए बाजार से ऋण लेना होगा। इसके अतिरिक्त सरकार के पास आने वाले समय में इस ऋण को अदा करने के लिए रकम उपलब्ध भी नहीं होगी, क्योंकि अर्थव्यवस्था लचर ही रहेगी।

इंडियन काउंसिल फॉर रिसर्च इन इंटरनेशनल इकोनॉमिक रिलेशंस के प्रोफेसर एके गुलाटी ने इस बात पर जोर दिया है कि देश को अपने श्रम की उत्पादकता बढ़ानी चाहिए। विदित हो कि चीन की तुलना में अपने देश में प्रति श्रमिक लगभग आधा माल बनाया जाता है। मसलन, यदि चीन में एक श्रमिक 1 फुटबॉल बनाता है तो अपने देश में पांच। ऐसी परिस्थिति में गुलाटी का कहना है कि हमें अपने श्रम की उत्पादकता बढ़ाकर अपने माल की उत्पादन लागत घटानी चाहिए, जिससे हम विश्व बाजार में निर्यात कर सकें।

यह बात सही है, लेकिन इसमें समस्या यह है कि वर्तमान और आने वाले समय में विश्व बाजार में संकट जारी रहने का अंदेशा है। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन ने तो यहां तक कहा है कि आने वाला समय गरीबी से परिपूर्ण, खतरनाक और अव्यवस्थित होगा। ऐसे में अगर हम अपने माल को सस्ता भी बना लें, तो भी उसका निर्यात नहीं कर पाएंगे। इसके अतिरिक्त हमें उत्पादकता बढ़ाने के लिए श्रम कानून बदलने होंगे एवं हमारे उद्यमियों को आधुनिक मशीनें भी लानी होंगी। जाहिर है कि इन कार्यों में समय लगेगा, तब तक शायद बहुत देर हो चुकी होगी। बहरहाल, एक अच्छी खबर यह है कि सरकार ने व्यवस्था बनाई है कि 2 करोड़ रुपये से कम के टेंडर अब केवल भारतीय उद्यमी भर पाएंगे। इसके अलावा सरकार ने चीन के टिकटॉक जैसे तमाम एप्स को प्रतिबंधित किया है और सौ रक्षा उपकरणों का देश में उत्पादन करने का निर्णय लिया है। यह अच्छी बात है कि देश के इलेक्ट्रॉनिक निर्यात पिछले कुछ वर्षों में दोगुने हो गए हैं। हालांकि सिटी रिसर्च की एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले छह वर्षों में अपने देश की मैन्युफैक्चरिंग की कुशलता में कोई खास सुधार नहीं हुआ है, इसलिए इलेक्ट्रॉनिक के निर्यात में जो वृद्धि हुई है, वह विशेष परिस्थितियों के कारण लगती है। ऐसी वृद्धि पूरी अर्थव्यवस्था में हो सकेगी, इस पर संदेह है।

आज भारत के उद्योगों को कच्चा माल उन्हीं दामों पर उपलब्ध है, जिस दाम पर चीन के उद्यमियों को मिल रहा है। फिर भी हम चीन की तरह से सस्ता माल क्यों नहीं बना पा रहे हैं? इस सिलसिले में फेडरेशन ऑफ फार्मा आंत्रप्रेन्योर के अध्यक्ष बीआर सिकरी का कहना है कि फार्मा उद्योग द्वारा चीन से कच्चा माल आयात करने का मूल कारण अपने यहां उत्पादन लागत का अधिक होना है। इसकी वजह किसी भी स्वीकृति को लेने में लगने वाला लंबा समय, पर्यावरण स्वीकृति में लचीलेपन की कमी, महंगी जमीन, बिजली की ऊंची दर और टैक्स के रिफंड मिलने में ज्यादा समय आदि है। यहां पर हम यह ध्यान रखें कि ये मामले मूलत: हमारी नौकरशाही से जुड़े हुए हैं। किसी स्वीकृति को मिलने में लंबे समय का कारण शिथिल नौकरशाही है। स्पष्ट है कि भारत सरकार को आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए नौकरशाही द्वारा अर्थव्यवस्था में जो अवरोध पैदा किए जा रहे हैं, उनसे देश को मुक्त करना होगा। चीन में भी भ्रष्टाचार व्याप्त है, लेकिन वहां का भ्रष्टाचार उद्योगों के विकास में बाधक नहीं। चीन के डेंग शियाओपिंग ने नौकरशाहों को प्रोत्साहन दिया था कि यदि वे अपने क्षेत्र में उद्योग लगवा सकेंगे तो उन्हें पदोन्नति दी जाएगी और उनके वेतन में वृद्धि की जाएगी। अपने देश में भी ऐसा ही कुछ करना होगा और ईमानदार नौकरशाहों को प्रोत्साहित करना होगा। सरकार को चाहिए कि वह नौकरशाहों का उपभोक्ताओं द्वारा गुप्त मूल्यांकन कराए। जो अकुशल पाए जाएं, उन्हें सेवानिवृत्त किया जाए।

महामारी के दौर में अब भी मास्क बगैर नहीं गुजारा

गोपालकृष्ण गांधी

यह विकट दौर है। कोरोना वायरस किसी को भी अपनी चपेट में ले सकता है। मास्क के बगैर अब हमारे जीवन का गुजारा नहीं।

किसी कक्षा में जैसे एक नया विद्यार्थी आता है, जमात में एक नया तालिब... और उस वातावरण का, उस माहौल का अभिन्न् हिस्सा बन जाता है, ठीक उसी तरह हिंदी/हिंदुस्तानी में एक नया शब्द प्रवेश कर गया है, एक नया लफ्ज दाखिल हो गया है, हमेशा-हमेशा के लिए- मास्क!

कोई इसे मुखौटा नहीं कहता। कोई इसे नकाब के नाम से नहीं बुलाता। मास्क... सिर्फ मास्क! हो अंग्रेजी का यह शब्द, हो विदेशी, लेकिन अब लाखों-करोड़ों हिंदुस्तानी इस छोटे से (क्या कहें इसको?) असबाब को मास्क के ही नाम से जानते हैं, पहचानते हैं, खरीदते हैं।

हल्का हरा-नीला सा मास्क, भारी सफेद या काले रंग का मास्क, घरेलू कपड़े से घर में ही बनाया हुआ तीन-तहों वाला मास्क, रंग-बिरंगा मास्क। सस्ता मास्क, महंगा मास्क, एक बार पहनने लायक मास्क, धो-धो कर बार-बार पहनने वाला टिकाऊ मास्क। बच्चों के लिए छोटा-नन्हा मास्क।

...पहने रखिए जनाब मास्क, भूलिए मत...बाहर जाना हो तो मास्क जरूर पहनकर रखिए, मास्क पहनिए और वायरस से बचिए। मास्क! कहां से आया है यह शब्द? क्या है इसकी व्युत्पत्ति? कहते हैं, फ्रांसीसी से आया है यह अंग्रेजी में। फ्रांसीसी भाषा की वर्तनी में- मास्क्यू। पुरातन फ्रांसीसी में मास्क का मतलब था %चेहरे को ढकने वाला परदा। फिर वही मास्क नौटंकियों के जरिए कुछ मजाकिया भी बन चला। कहते हैं कि अरबी लफ्ज %मसखरा भी मास्क से जुड़ा हुआ है।

रंगमंच में और नाट्य-क्षेत्र में मास्कों की, मुखौटों की अपनी जगह होती है। सराइकेला और मयूरभंज के छाउ नाट्य मास्क के बिना नहीं रचाए जाते। हमारी आदिवासी जनता के नृत्य-संबंधी मास्क इंतहा खूबसूरत होते हैं।

सर्कसों में जोकर मास्क पहना करते थे। मेरा नाम जोकर में राज कपूर का पहना हुआ (या पेंट किया हुआ) मास्क मशहूर है। मुकेश की आवाज में गाया हुआ जीना यहां मरना यहां, इसके सिवा जाना कहां... भी उतना ही मशहूर। कितना हंसाया राज-जी ने उस गाने के साथ, कितना रुलाया!

आजकल सर्कस कम दिखते हैं- सर्कस मंचों पर। अत जोकर भी कम हो गए हैं, सर्कस मंचों पर। दोनों का मानो तबादला-सा हो गया है। वे अन्य मंचों में चले गए हैं, सर्कस भी और जोकर भी। और किस्म-किस्म मास्क दिखते हैं उन पर! उन्हें देख पता नहीं चलता कि हम हंसें या रोएं!

बहरहाल! अब जो मास्क हमारी जीवन-प्रक्रिया से जुड़ गया है, जिंदगी की राहों का हिस्सा बन गया है, उसका काम दूसरा है। उसकी भूमिका, उसकी सिफत कुछ और है। माना गया है कि जैसे ही वैक्सीन रूपी उपाय तशरीफ लाएगा, वायरस अपनी तशरीफ ले जाएगा। ईश्वर करे, खुदा करे ऐसा ही हो। लेकिन कौन जाने वैक्सीन कब आएगी? और कौन कह सकता है कि वह वैक्सीन हिंदुस्तान की एक बिंदु तीन अरब लोगों तक पहुंच पाएगी, उस तमाम जन-समूह को सुकून दे पाएगी? और अगर हर हिंदुस्तानी को कोरोना का टीका लग भी जाता है, तो वह टीका किस हद तक उस आदमी को सुरक्षित, महफूज, सही सलामत रख पाएगा?

और मैं यह भी सुनता हूं कि वैक्सीन जब कोरोना की महामारी को रफा-दफा करेगी, तब भी वह पूरी तरह नहीं जाएगी। %एपिडेमिक न रहते हुए वह %एंडेमिक बन जाएगी। यानी कहीं न कहीं, इधर-उधर सिकुड़कर वास करेगी और कम-ज्यादा मात्रा में हमें परेशान करती रहेगी। यानी मास्क से जनता अब कभी भी अलग नहीं हो सकेगी। बुजुर्ग लोग तो कतई नहीं। भीड़ में बिल्कुल नहीं, मुसाफिरी में नहीं, जश्न में, खुशी-ओ-गम के मौकों में नहीं, मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर-गुरुद्वारे में नहीं, त्योहारों में नहीं, मंडियों में नहीं, मॉल्स में नहीं और जब सिनेमाघर फिर खुलेंगे, तब उनमें नहीं।

बुद्धिमानी, अक्लमंदी इसी में है कि हम यह मानकर चलें कि अब अनिश्चित-काल तक के लिए हम और हमारे मास्क जीवनसाथी बन गए हैं।

हम बेहद मुश्किली के दौर से गुजर रहे हैं। लाखों की नौकरियां, रोजगारी जाती रही हैं। ईश्वर की कृपा से खेती रुकी नहीं है। फसल कटी है, अनाज-धारा चलती आ रही है। लेकिन अगर जनता अपनी खरीदारी की ताकत को खोने लगे, अनाज का क्रय-विक्रय अड़चन में पड़े तो संकट होगा।

और साथ-साथ महामारी रुकने का नाम नहीं ले रही। बेबसी से हम हर रोज आंकड़े परखते हैं... पीड़ितों, मृतकों की संख्या कम हुई भी कि नहीं? बिल्कुल नहीं। अमेरिका के बाद हमारा नंबर आता है। जल्द ही अमेरिका को पीछे छोड़ देगा हिंदुस्तान!

दुख की बात यह है कि यह स्थिति कुछ और हो सकती थी। इतनी बदतर नहीं। क्योंकि उपाय हमारे हाथों में रहा है-मास्क। सम्माननीय प्रधानमंत्रीजी और अनेक विशेषज्ञ कहते आए हैं, दुहराते आए हैं कि %मास्क पहनिए... इससे श्रेष्ठ उपाय नहीं... मास्क पहनिए और हाथों को साबुन-पानी से धोते रहिए..। महंगा उपाय नहीं यह, लेकिन हम मानें तब ना!

नहीं मान रहे। मास्क हासिल करे हैं, लेकिन बाज बार देखिए मास्क पहनने के तरीके को। नाक से नीचे... और कई बार मुंह से भी नीचे...ठोड़ी पर टिका हुआ रहता है मास्क। और तो और, कई बार आप देखेंगे जनाब गले पर लटकाए हुए हैं मास्क को, जैसे कि वह कोई स्कार्फ हो।

यकीन नहीं होता! ऐसा नहीं कि अशिक्षित लोग ऐसा करते हैं। ना! पढ़े-लिखे लोगों को भी आप पाएंगे यही करते हुए। चले आ रहे हैं श्रीमान, घूमते आ रहे हैं हुजूर... दुकानों से, सड़क पर, पार्क में, मास्क को ठोड़ी पर टिकाए, गले में लटकाए हुए। हमारी, समाज की भी कुछ जिम्मेदारी है। वायरस किसी को भी अपने लपेटे में ले सकता है। बहुत ध्यान से रहने वाले को भी। न जाने कब, कहां कोई कसर रह जाए और लग जाए वायरस!

इंदौर सहित 19 जगह सीबीआई छापे

नईदिल्ली (,tsalh) Aसीबीआई ने 2021 जेईई-मेंस परीक्षा में अनियमितता से जुड़े एक गिरोह का पर्दाफाश किया है। सीबीआई ने इस मामले में दिल्ली, पुणे, बेंगलुरु, जमशेदपुर और इंदौर में 19 स्थानों पर छापा मारा है। इस दौरान 25 लैपटॉप, सात कंप्यूटर, 3 पोस्ट डेटेड चेक के अलावा काफी दस्तावेज बरामद हुए हैं। सूत्रों के मुताबिक एफिनिटी एजुकेशन के निदेशक जेईई मेन्स में बच्चों को बेहतर रैंकिंग दिलाने का गिरोह चला रहे थे। ताकि एनआईटी (राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान) में उन्हें प्रवेश मिल सके। सौदा 12 से 15 लाख रुपए में होता था। सीबीआई प्रवक्ता आरसी जोशी ने बताया- 'इस मामले में बुधवार को कंपनी, उसके निदेशकों, कर्मचारियों और अन्य के खिलाफ केस दर्ज किया गया।' सीबीआई ने एफिनिटी एजुकेशन के निदेशकों सिद्धार्थ कृष्ण, विशंभरमणि त्रिपाठी और गोविंद वार्ष्णेय के साथ कुछ बिचौलियों और परीक्षा केंद्रों में पदस्थ स्टाफ के खिलाफ केस दर्ज किया है। आरोपी जेईई मेन्स में कम रैंकिंग वाले छात्रों को बेहतर रैंकिंग और शीर्ष एनआईटी संस्थान में एडमिशन का भरोसा दिलाकर फंसाते थे।

छात्रों से जमानत के तौर पर उनकी मार्कशीट, पहचान पत्र, पोस्ट डेटेड चेक लेते थे। इस धांधली का भंडाफोड़ हरियाणा के सोनीपत स्थित एक परीक्षा केंद्र के जरिए हुआ है। आरोपियों ने इस परीक्षा केंद्र के कुछ कर्मचारियों से साठगांठ की थी। छात्रों को यही परीक्षा केंद्र चुनने को कहा था। फिर रिमोट एक्सेस के जरिए उनकी परीक्षा दी जाती थी।

30 पोस्ट डेटेट चेक मिले, इन्हीं से पता चली सौदे की रकम

सूत्रों के मुताबिक छापे में 3 पोस्ट डेटेड चेक मिले हैं। इनमें 12 से 15 लाख की रकम भरी है। यह इस सेंटर पर परीक्षा देने वाले अभ्यर्थियों के अभिभावकों के हैं। चेक में भुगतान की तारीख एडमिशन के बाद की है। सीबीआई के अनुसार, संबंधित परीक्षार्थी के यूजर आईडी व पासवर्ड के जरिए आरोपी किसी अन्य से ऑनलाइन उत्तर दिलवाकर दाखिला सुनिश्चित करवाता। उसके बाद पीडीसी में अंकित तारीख के बाद उसे बैंकों में जमा कर कैश किया जाता।

आप अध्यक्ष कलेर ने खटीमा गोलीकांड के शहीदों को किया याद

खटीमा (संवाददाता)। उत्तराखंड आंदोलन में 1 सितम्बर को खटीमा गोलीकाण्ड की आज 27वीं बरसी पर आम आदमी पार्टी उत्तराखण्ड के प्रदेश अध्यक्ष एस. एस. कलेर ने आप कार्यकर्ताओं के साथ खटीमा शहीद स्थल पहुंच कर सभी शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उन्हें नमन किया।

इस दौरान आप प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि, हम उन सभी उत्तराखंड के वीर सपूतों और शहीदों के सदैव ऋणी रहेंगे ,जिनकी शहादत की बदौलत हमें अलग राज्य मिला। ये उन शहीदों की ही शहादत है कि, आज हम उत्तर प्रदेश से अलग होकर अलग राज्य में रह रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज भी शहीदों के सपनों का उत्तराखंड नहीं बन पाया है ,इसलिए आज हम सब ये संकल्प लेते हैं कि, आगे आने वाला समय निश्चित रूप से हम सभी के सपनो,शहीदों के सपनों का उत्तराखण्ड बनने की दिशा में अग्रसर होगा।

इस दौरान मीडिया से बात करते हुए उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत के बयान पर तंज कसते हुए कहा कि हरीश रावत ने पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के चीफ नवजोत सिंह सिद्धू और 4 कार्यकारी अध्यक्षों को 'पंज प्यारे' कहकर संबोधित किया,इस पर उन्होंने आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि हरीश रावत ने नवजोत सिंह सिद्धू और उनके कार्यकारी अध्यक्षों की तुलना गुरु गोविंद सिंह द्वारा खालसा में शामिल किए गए 卐पंज प्यारों卐 से की है जिससे सिखों की भावनाओं को ठेस पहुंची है। उन्होंने आगे कहा कि जिस प्रकार से पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने जाति-धर्म विशेष की भावनाओं का अपमान किया है उसके लिए हरीश रावत जी को सार्वजनिक तौर पर माफी मांगनी चाहिए।

इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष एस एस कलेर के साथ,प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य ठाकुर उदय प्रताप सिंह, संयुक्त सचिव अमन अरोड़ा,अनुज अग्रवाल,जिला अध्यक्ष जसपाल सिंह,संगठन मंत्री सुनील कण्डवाल,नगर अध्यक्ष राकेश शुक्ला,जिला कार्यकारिणी सदस्य गिरीश जोशी,कैलाश पाण्डेय,सोनू खुशदिल,कमल बिष्ट,अर्जुन सिंह,गीता देवी,नवीन राणा,सुरेन्द्र गुरुंग,दलीप शुक्ला,राम संजीवन,सुभाष चौहान सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

धारचूला आपदा प्रभावितों से मिले मंत्री चुफाल, राहत-बचाव कार्य में तेजी के निर्देश

पिथौरागढ़ (सू. वि.)। कैबिनेट मंत्री बिशन सिंह चुफाल ने आपदा प्रभावित क्षेत्र धारचूला का दौरा किया। उन्होंने आपदा पीड़ितों से मिलकर उनका हालचाल जाना। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों के साथ बैठक कर आपदाग्रस्त क्षेत्रों में राहत और बचाव कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को जुम्मा समेत सभी आपदाग्रस्त क्षेत्रों में प्रभावितों तक राहत और सहायता पहुंचाने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने अधिकारियों को सड़कों को जल्द खोलने को कहा।पिथौरागढ़ जिले के आपदाग्रस्त क्षेत्र धारचूला के दौरे पर पहुंचे कैबिनेट मंत्री बिशन सिंह चुफाल ने आपदा प्रभावितों से मुलाकात कर उनका हालचाल जाना और उन्हें सरकार की तरफसे हर संभव मदद मुहैया कराने का भरोसा दिलाया। मंत्री ने जिलाधिकारी को आपदा प्रभावित क्षेत्र जुम्मा में बिजली, पानी की जल्द व्यवस्था करने के साथ ही पर्याप्त खाद्यान्न सामग्री और दवाइयां पहुंचाने के निर्देश दिए। चुफाल ने आपदा प्रभावितों को आश्वासन दिलाते हुए कहा कि भूवैज्ञानिकों की रिपोर्ट के बाद आपदा प्रभावितों के पुर्नवास की व्यवस्था की जाएगी.आपदाग्रस्त क्षेत्र जुम्मा में दो लापता व्यक्तियों की तलाश के लिए तीसरे दिन भी रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है।

घातक हो सकता है सामान्य सिरदर्द

सिरदर्द एक ऐसी आम समस्या है जिससे हर कोई अपने जीवन में कभी न कभी पीड़ित होता ही है। सिरदर्द होने के कई कारण हो सकते हैं लेकिन इसके आम कारणों में दृष्टिदोष से लेकर साइनस परेशानी शामिल हैं। गंभीर कारणों में मस्तिष्क में ट्यूमर भी हो सकता है।वर्तमान समय की भागदौड़ वाली जीवनशैली के कारण लोगों में सिरदर्द एक आम समस्या बन गई है। सिरदर्द होने के आम कारणों में तनाव मुख्य रूप से जिम्मेदार होता है जो आज के समय में लगभग सभी को होता है ।

उच्च रक्तचाप से पीड़ित होने पर भी सिरदर्द की समस्या सामने आ सकती है। उच्च रक्तचाप होने का खतरा आमतौर पर 4 वर्ष की आयु के बाद होता है लेकिन आजकल कम आयुवर्ग के लोग भी इससे पीड़ित हो रहे हैं। कभी-कभी मस्तिष्क में ट्यूमर होने से भी सिरदर्द की समस्या हो सकती है, लेकिन ऐसा बहुत कम मामलों में होता है।

कम रक्तचाप भी सिरदर्द का कारण हो सकता है। इसके अलावा आम सर्दी होने अथवा साइनस में सूजन से भी सिरदर्द की समस्या सामने आ सकती है। सिरदर्द से बचने के लिए व्यक्ति को तनाव से बचना चाहिए।

तनाव के कारण कंधों, गर्दन और खोपड़ी की मांसपेशियों में संकुचन होता है जिससे सिरदर्द की समस्या सामने आती है। कम नींद, खाना समय पर नहीं खाने तथा शराब एवं मादक पदार्थों के सेवन से भी सिरदर्द हो सकता है। चॉकलेट और पनीर जैसी चीजों के सेवन से भी सिरदर्द हो सकता है। अक्सर काफी पीने वाले लोगों को समय पर काफी नहीं मिलने पर सिरदर्द हो सकता है। भागदौड़ और तनावभरे जीवन में दिमाग को शांत और तनावमुक्त रखने के लिए सुबह के समय टहलने और ध्यान आदि व्यायाम करना चाहिए। इसके अलावा मल्टीविटामिन और एंटीआक्सीडेंट दवाइयां ली जा सकती हैं। यदि किसी को लंबे समय से सिरदर्द की समस्या है तो उसे किसी विशेषज्ञ चिकित्सक से सलाह लेकर सिटी स्कैन कराना चाहिए, जिससे इस समस्या का मूल कारण पता लग सके। इसके अलावा आंखों की नियमित जांच करानी चाहिए तथा दृष्टिदोष होने पर आंखों का सही नम्बर का चश्मा लेना चाहिए।

हेल्थ टिप्स : जरूरी है रंगबिरंगा फूड

वैज्ञानिकों ने यह पाया है कि अलग-अलग कलर्स के फल या फूड प्रोडक्ट्स आपकी बॉडी के अलग-अलग पार्ट्स को फायदा पहुंचाते हैं! आइए देखें कौन-सा कलर बॉडी के किस हिस्से का फ्रेंड है :

सफेद

आलू, लहसुन, सफेद मशरूम, दूध के प्रोडक्ट्स, दही, मक्खन, घी आदि आपके फेफड़ों यानी लंग्स के लिए फायदेमंद होते हैं।

ऑरेंज

प्लीहा की सलामती के लिए ऑरेंज कलर की चीजें खाना फायदेमंद होता है। संतरों में विटामिन-सी तो होता ही है, कुछ मात्रा में विटामिन-ए भी होता है, जो प्लीहा के लिए अच्छा होता है।

हरा

हरे फल-सब्जियों में लूटीन व इंडोल नामक फायटोकेमिकल्स होते हैं, जो लीवर की रक्षा करते हैं। अत: हरे रंग की चीजें खूब खाएं।

परपल

यदि आप अपने ब्रैन की सलामती चाहते हैं तो परपल फल-सब्जियों को अपने आहार में शामिल करें। इनमें अंगूर, प्याज, जामुनी रंग की पत्तागोभी, बैंगन आदि शामिल हैं।

काला

यूं काला रंग लोगों को कम ही पसंद होता है, खास तौर पर खाने-पीने के मामले में, लेकिन यकीन मानिए, काले रंग का आहार आपके लीवर के लिए बहुत लाभकारी होता है। अत: मुनक्का, काली चौला फली, काले जैतून आदि खाया करें।

लाल

यदि आप हार्ट की रक्षा करना चाहते हैं तो रेड कलर की चीजें खाइए। रेड (तथा पिंक) रंग के फल-सब्जी में फायटोकेमिकल्स पाए जाते हैं। तरबूज, अमरूद, टमाटर आदि इस श्रेणी में आते हैं। स्ट्रॉबेरी, रसबेरी तथा बीटरूट में एंथोसायनिन पाए जाते हैं। यह फायटोकेमिकल्स का ही एक समूह है, जो हाई ब्लडप्रैशर को कंट्रोल करता है और डायबिटीज से जुड़ी प्रॉब्लम से बचाता है।

जानिए, खट्टी-मीठी छाछ के फायदे

मट्ठा (छाछ) धरती का अमृत है। यह शरीर की बीमारियों को दूर भगाता है। बाजार में बिकने वाले महंगे शीतल पेयों से छाछ लाख गुना अच्छी है। इसके कई फायदे हैं। मट्ठे का प्रयोग कई तरह से किया जा सकता है-

हिचकी चलने पर मट्ठे में एक चम्मच सौंठ डालकर सेवन करें।

उल्टी होने पर मट्ठे के साथ जायफल घिसकर चाटें।

गर्मी में रोजाना दो समय पतला मट्ठा लेकर उसमें भूना जीरा मिलाकर पीने से गर्मी से राहत मिलती है।

मट्ठे में आटा मिलाकर लेप करने से झुर्रियाँ कम पड़ती हैं।

कहा जाता है कि मुंहासे होने पर गुलाब की जड़ मट्ठे में पीसकर मुंह पर लगानी चाहिए।

पैर की एड़ियों के फटने पर मट्ठे का ताजा मक्खन लगाने से आराम मिलता है।

सिर के बाल झड़ने पर बासी छाछ से सप्ताह में दो दिन बालों को धोना चाहिए।

मोटापा अधिक होने पर छाछ को छौंककर सेंधा नमक डालकर पीना चाहिए।

सुबह-शाम मट्ठा या दही की पतली लस्सी पीने से स्मरण शक्ति तेज होती है।

उच्च रक्तचाप होने पर गिलोय का चूर्ण मट्ठे के साथ लेना चाहिए।

अत्यधिक मानसिक तनाव होने पर छाछ का सेवन लाभकारी होता है।

जले हुए स्थान पर तुरंत छाछ या मट्ठा मलना चाहिए।

विषैले जीव-जंतु के काटने पर मट्ठे में तम्बाकू मिलाकर लगाना चाहिए।

कहा जाता है किसी ने जहर खा लिया हो तो उसे बार-बार फीका मट्ठा पिलाना चाहिए। परंतु डॉक्टर की सलाह अवश्य लें। अमलतास के पत्ते छाछ में पीस लें और शरीर पर मलें। कुछ देर बाद स्नान करें। शरीर की खुजली नष्ट हो जाती है।

स्टूडेंट्स के लिए स्पेशल हेल्थ टिप्स

परीक्षा के दिनों में सबसे ज्यादा तनाव विद्यार्थियों के अभिभावकों को होता है क्योंकि उनका बच्चा खाना-पीना सब छोड़ देता है। ऐसे में उनकी चिंता सेहत और रिजल्ट दोनों को लेकर होती है। आखिर अच्छे रिजल्ट के लिए स्वस्थ मस्तिष्क का होना जरूरी है और स्वस्थ मस्तिष्क, स्वस्थ शरीर में ही काम कर सकता है। पेश है परीक्षा के दिनों के लिए सरल हेल्थ टिप्स:

* एक गाजर और पत्ता गोभी के लगभग 5-6 ग्राम अर्थात 1-12 पत्ते काटकर प्लेट में रख लें। इस पर हरा धनिया काटकर डाल दें। फिर उसमें सेंधा नमक, काली मिर्च का पावडर और नीबू का रस मिलाकर खूब चबा-चबाकर स्नैक्स के रूप में खाएं। इसमें मूंगफली के दाने और मनचाहे ड्रायफ्रूट्स भी डाल सकते हैं। भोजन के साथ एक गिलास छाछ भी पिया करें। छाछ से दिल व दिमाग में तरावट रहती है। यह स्मरण शक्ति को तेज करती है। रात को 9 बजे के बाद स्टडी के लिए जागें तो आधे-आधे घंटे के अंतर पर आधा गिलास ठंडा पानी पीते रहें। इससे जागरण के कारण होने वाली प्रॉब्लम से बचेंगे। वैसे 11 बजे से पहले सो जाना ही ठीक होता है। * लेटकर या झुके हुए बैठकर नहीं पढ़ना चाहिए। रीढ़ की हड्डी सीधी रखकर बैठना चाहिए। इससे आलस्य या निद्रा का असर नहीं होगा और स्फूर्ति भी रहेगी।

स्मार्ट फोन के साथ मैनर्स भी हैं जरूरी

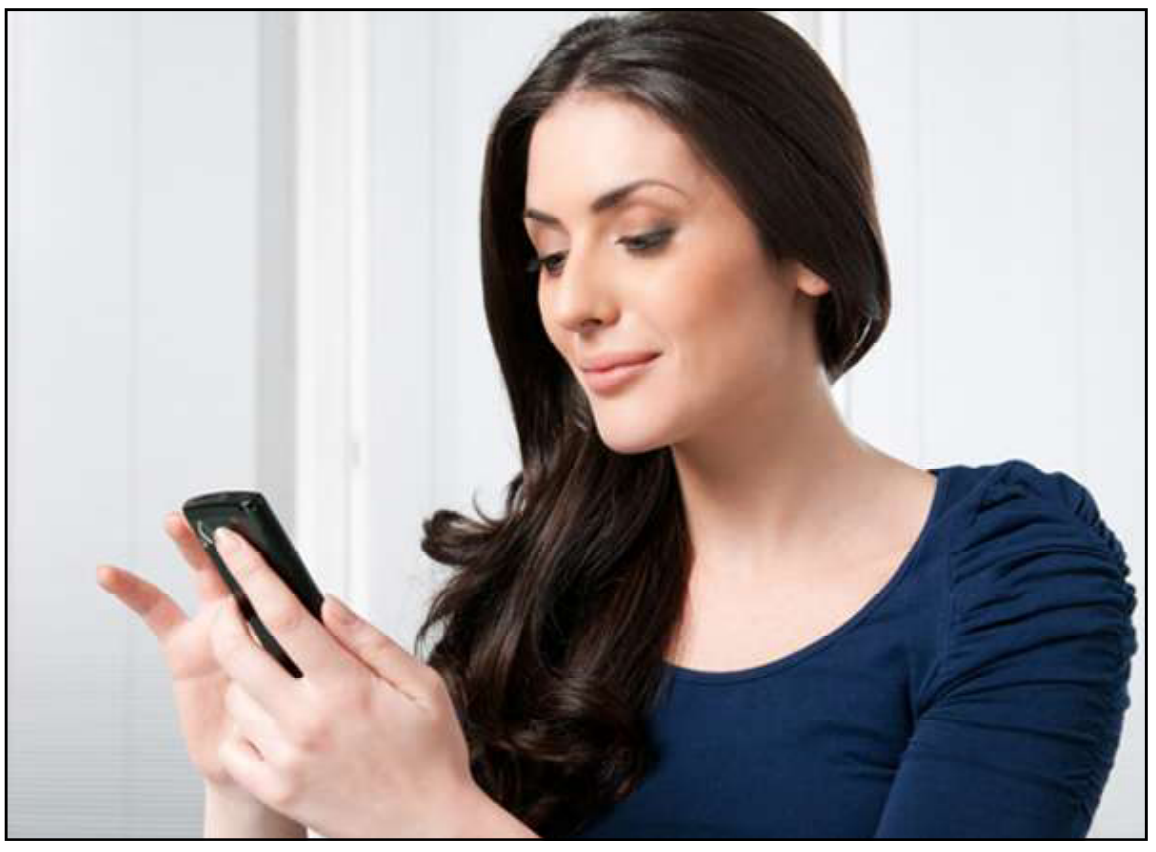

मोबाइल पर अनर्गल बात करने का शौक अगर दोस्तों और घर तक ही रहे तो अच्छा लगता है। ऑफिस मैनर्स में सेल फोन इस्तेमाल करने के कुछ तरीके हैं, आइए जानें

मोबाइल पर गेम खेलना या फिर मनपसंद गाने सुनने का शौक अगर दोस्तों और घर तक ही रहे तो अच्छा लगता है, लेकिन ऑफिस मैनर्स में सेल फोन का इस तरह से इस्तेमाल करना आपको कामचोर और बातूनी दिखाता है, साथ ही आपके इस रवैये का प्रभाव आपके सहकर्मियों के काम पर भी पड़ता है। कॉलसेंटर और मल्टीनेशनल कंपनियों में तो खासतौर से सेल फोन पर बातें करने का समय बंधा होता है। आप केवल अपने ब्रेक टाइम पर ही सेल फोन इस्तेमाल कर सकते हैंइसके बावजूद कुछ लोग अपना काम छोड़कर घंटों फोन पर बातें करते हैं, लेकिन उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई व्यक्ति उनके बारे में क्या सोच रहा है? ऑफिस में सेल फोन इस्तेमाल करते वक्त कुछ मैनर्स का भी ध्यान रखें।

ऑफिस में लाउड वॉल्यूम रिंग टोन्स न लगाएं, इससे आपके कलीग डिस्टर्ब हो सकेत हैं। इसलिए ऑफिस में अपना सेल फोन साइलेंस मोड या वॉइस मेल पर ही रखें।

बहुत सी कंपनियों ने अपनी पॉलिसियों में सेल फोन के इस्तेमाल करने की जगह और वाल्यूम रेंज भी तय की है, जिसके तरह वहां काम करने वाले लोगों को अपना फोन इस्तेमाल करना पड़ता है।

ऑफिस के पब्लिक प्लेस पर खड़े होकर बात न करें।

कुछ लोगों में बार-बार सेल फोन बदलने की आदत होती है, और फिर उस फोन के फंक्शन ऑफिस के हर व्यक्ति को बताना और तरह-तरह की रिंग टोन सुनाना अन्य कलीग का सिर दर्द बन जाता है।

ऑफिस के कॉरिडोर में फोन पर लंबी-चौड़ी बातें न करें। मीटिंग के दौरान सेल फोन ऑफ रखें।

अपने सहकर्मी से बिना पूछे उसकी फोटो न खीचें और वीडियो फिल्म न बनाएं।

खूबसूरती में इजाफा फेस मसाज से

आमतौर पर मसाज शब्द को हम बॉडी मसाज से जोडते हैं, लेकिन फेस मसाज के अनगिनत फायदों के चलते वो भी अब ब्यूटी इंडस्ट्री में अपनी जगह बनाता जा रहा है। चेहरे की मालिश ना सिर्फ स्किन के लिए फायेदमंद है, बल्कि उससे ब्लड सर्कुलेशन बढता है, जिससे पूरी बॉडी को फायदा पहुंचता है। यह आपको रिलैक्स कर देती है। सिरदर्द व साइनस जैसी परेशानियों से भी निजात दिलाती है। इसके अलावा मसाज के दौरान प्रेशर पॉइंट्स पर दबाव पडने से बॉडी के अंदरूनी अंगों की कार्यक्षमता भी बेहतर होती है, जिसमें गाल ब्लैडर और लिवर प्रमुख हैं। यहां हम फेशियल मसाज से जुडे फायदे और मसाज का सही तरीका बताने जा रहे हैं। जिससे आपकी सुन्दरता में और इजाफा कर सकती हैं और पा सकती हैं खिली-निखरी त्वचा।

आंखों के आसपास मसाज करने से बेहतर होगा कि वहां उंगलियों से हल्का-हल्का दबाव डालें।

जब भी आप मौइश्चराइजर अप्लाई करें या फेस वॉश करें, मसाज की तकनीक अपनाते हुए 2-3 मिनट तक मसाज करें। अगर दिन में दो बार नहीं कर पा रही हों, तो सुबह 5 मिनट मसाज जरूर करें।

कोशिश करें कि सुबह और शाम को आप खुद ही फेस मसाज को अपने रूटीन में शामिल कर लें।

जब तक पूरा तेल स्किन सोख ना लें, तब तक मसाज करते रहें।

मसाज के लिए तेल का यूज करना है या क्रीम व लोशन का, यह आप पर निर्भर करता है।

उसके बाद गाल, कान, होंठ और माथे पर मसाज करें।

अन्य तेल जो आप मसाज के लए यूज कर सकती हैं, वो हैं तिल का तेल, आल्मंड, ग्रेपसीड और सनफ्लोवर। हैवी ऑयल्स, जैसे-जोजाबा और औलिव औयल में थिनर मिक्स करके ही यूज करें, जैसे-नींबू का रस।

उन हिस्सों पर ज्यादा ध्यान दें, जहां कि स्किन ड्राई हो, जहां झुर्रियों जल्दी पडती हों और जहां स्ट्रेस ज्यादा महसूस होता हो, जैसे-आईब्रो के आसपास, होंठों के पास, खासकर लाफिंग लाइन्स पर

गुलाबी रंगत कहीं खो ना जाएं

सौन्दर्य ईश्वर की देन है, पर उसे बनाए रखना अपना खुद का काम है। महिलाएं प्राचीनकाल से ही अपनी खूबसूरती के प्रति जागरूक रही हैं। स्किन के अलगअलग प्रकार पर ध्यान दिया जाएं और स्किन की देखभाल निम्नलिखित प्रकार से करनी चाहिए।

नहाने के बाद स्किन में नमी बरकरार रखने के लिए, आपको मौइश्चराइजर का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है। अतिरिक्त सुरक्षा के लिए एक ?से मौइश्चराइजर का चुनाव करें, जो जोजोबा शिया बटर या कोकोआ औयल से युक्त हो।

अपने होंठों को चाटें नहीं, क्योंकि इससे आपके होंठ खुरदरे हो जाते हैं। लिप बाम का उपयोग नियमित रूप से करें। अपने होंठों पर एसपीएफ लिप बाम या पैट्रोलियम जैली का उपयोग करें।

कम चीनी और नमक वाला खाना लें। ताजा सब्जियां और फल खाएं।

औलिय स्किन है तो विटामिन बी5 सीरम का उपयोग कर सकती हैं, क्योंकि यह बहुत नमी प्रदान करने वाला होता है।

इस मौसम में एडियों में आसानी से दरारें आ जाती हैं। इस अवस्था से बचने के लिए हर रात फुट क्रीम या पैट्रोलियम जैली का यूज करें और पैरों में जुराबें पहन कर उन्हें गरम रखें।

अपने हाथों को सुरक्षित रखने के लिए बर्तन धोते या घर को साफ करते समय दस्ताने पहनें। सुबह और रात में विटामिन ई युक्त औयल का प्रयोग करें। रात में अपने हाथों पर विटामिन ए और डी युक्त क्रीम का गाढा लेप लगा सकती हैं, क्योंकि सोते समय यह आपकी स्किन पर सुरक्षात्मक सतह का निमार्ण करती है।.

गर्मियों के मौसम में कैसे रखें अपना ख्याल

०जहां तक संभव हो सके, ताजे भोजन को ही तरजीह दें। ज्ञात रहे इस मौसम में सब्जी, दालें जल्दी खराब हो जाती हैं। अत: ठंडा एवं बासी भोजन आपका स्वास्थ्य खराब कर सकता है।

* मौसमी फलों का सेवन अत्यधिक करें। गर्मी में आम, खरबूजा, तरबूज, संतरा, मौसंबी, अंगूर एवं ककड़ी बहुतायत में मिलती हैं। इनसे आपको गर्मी से सुकून तो मिलेगा ही आपको तरोताजा बनाए रखने में भी ये मददगार साबित होंगे।

* ज्यादा मात्रा में चाय या कॉफी को महत्व न देते हुए नींबू की मीठी शिकंजी, कच्चे आम का पना, मट्ठा (छाछ), गन्ने के रस को प्राथमिकता दें। इससे आपको ऊर्जा तो मिलेगी ही आप शीतलता का अहसास भी करेंगे।

* कैरी पने के सेवन से लू से भी बचा जा सकता है। याद रहे, फ्रीज के ठंडे पानी के बजाए मटके का ठंडा पानी ही पिएं।

* कम से कम दिन में 5-6 बार ठंडे पानी से अपने चेहरे पर छींटें मारें। इससे आपकी आंखें स्वस्थ रहेंगी।

हर्बल कॉस्मेटिक: त्वचा के साथ संभाले करियर

देश में बेरोजगार युवाओं की संख्या ज्यादा है और नौकरियां कम। वैसे भी जानकारी व पहुंच की कमी के कारण हमारे ग्रामीण युवा नौकरियों के अवसर हासिल करने में नाकाम ही रहते हैं। स्वरोजगार उनके लिए वरदान साबित हो सकता है। कम लागत में अपने ही क्षेत्र में उत्पादन इकाई लगा कर आप अच्छी कमाई कर सकते हैं। ऐसा ही एक स्वरोजगार है हर्बल कॉस्मेटिक्स। इस बारे में बता रहे हैं अशोक वशिष्ठ

भारत में पढ़े-लिखे बेरोजगारों की संख्या को देखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय और लघु उद्योग मंत्रालय ने पिछले कुछ वर्षों से स्वरोजगार को बढ़ावा देने की कई अच्छी पहल की हैं। इस दिशा में कई प्रशिक्षण संस्थान भी खोले हैं, जहां निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। उनमें एक कोर्स है हर्बल कॉस्मेटिक मैन्युफैक्चरिंग।

हर्बल कॉस्मेटिक लघु उद्योग का उत्पाद है। इसकी मार्केटिंग और एक्सपोर्ट में सरकार कई तरह की सहायता करती है, साथ ही ऋण भी मुहैया कराती है। घर में ही मैन्युफैक्चरिंग यूनिट लगा कर कम लागत में अच्छी कमाई की जा सकती है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोग अपनी त्वचा को लेकर काफी सेंसिटिव हैं। हमारे देश के लोग भी त्वचा की देखभाल को लेकर सजग हुए हैं। नामी-गिरामी स्किन सेंटर खुले हैं, इनमें कॉमन बात यह है कि सभी में हर्बल कॉस्मेटिक की मांग है। हर्बल कॉस्मेटिक का आधार जड़ी-बूटियां हैं और इसमें कोई कैमिकल भी नहीं होता। इसके इस्तेमाल से न तो स्किन के खराब होने का डर होता है, न ही रिएक्शन होने का खतरा।

भारत में जड़ी-बूटियां काफी मात्रा में उपलब्ध हैं, इसलिए यहां हर्बल कॉस्मेटिक का उत्पादन अपेक्षाकृत आसान व कम लागत में संभव है।

मैन्युफैक्चिरग यूनिट लगाने का खर्च

हर्बल कॉस्मेटिक मैन्युफैक्चरिंग का आधार जड़ी-बूटियां हैं, जिनमें चंदन, हल्दी, तुलसी, नीम, एलोवेरा, नारियल तेल, लौंग आदि का उपयोग किया जाता है। इस कच्चे माल के साथ-साथ जरूरी बर्तन, गरम करने के लिए गैस

और एक कमरे की जरूरत होती है, जहां एक यूनिट लग सके। इन सब मदों में खर्च लगभग 5 हजार रुपए तक आता है। यह खर्च इस बात पर निर्भर करता है कि आपके पास अपनी जगह है या नहीं या फिर आप कितनी बड़ी यूनिट लगाने की योजना बना रहे हैं। बड़ी यूनिट में अधिक कर्मचारियों को रखने से खर्च बढ़ सकता है, इसलिए बेहतर यही होगा कि काम को छोटे स्तर पर ही शुरू किया जाए और जब आमदनी होने लगे तो उसे धीरे-धीरे बढ़ाया जाए।

ऋण सुविधा

मैन्युफैक्चरिंग यूनिट लगाने के लिए खर्च का 9 फीसदी भाग ऋण के रूप में प्राप्त किया जा सकता है। सहायता की सीमा 2 लाख रुपए तक है। महिला उद्यमियों को 3 प्रतिशत तक ऋण में सब्सिडी भी मिलती है। यह ऋण पब्लिक सेक्टर के बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक और केंद्र व राज्य सरकार की वित्तीय संस्थाएं देती हैं। ऋण लेने की फॉर्मेलिटी करने से पहले सभी तरह के कागजात आदि जो ऋण लेने के लिए जरूरी हों, पहले से ही तैयार कर लेने चाहिए, ताकि ण लेने की प्रक्रिया ज्यादा लंबी न खिंचने पाए और काम शीघ्र शुरू किया जा सके।

पैकेजिंग और मार्केटिंग

आजकल उत्पाद की चालिटी के साथ-साथ पैकेजिंग पर भी काफी जोर दिया जाने लगा है। इसकी पैकिंग मार्केट की मांग और निर्यात किए जाने वाले देश के लोगों के शॉपिंग बिहेवियर को देखते हुए कर सकते हैं। हर्बल कॉस्मेटिक की मांग भारत के बाजार में भी काफी है, लेकिन इन दिनों विदेशों के स्पा सेंटरों में भी हर्बल कॉस्मेटिक के बढ़ते उपयोग ने उद्यमियों के लिए एक्सपोर्ट की संभावनाओं का काफी विस्तार किया है।

फ्रंट ऑफिस मैनेजर, स्वागत है जनाब

होटल उद्योग अवसरों की खान है। इसी का एक विभाग है फ्रंट ऑफिस। एक फ्रंट ऑफिस मैनेजर पर पूरे होटल को व्यवस्थित रखने की जिम्मेदारी होती है। यदि आप जिम्मेदारियों को निभाने में रुचि रखते हैं तो यह क्षेत्र एक बेहतर करियर प्रदान कर सकता है। इस बारे में बता रहे हैं फजले गुफरान इंजीनियरिंग, मेडिकल, बिजनेस मैनेजमेंट के बाद होटल मैनेजमेंट को एक कामयाब एवं हॉट करियर विकल्प के रूप में देखा जाने लगा है। कारण, इसमें अच्छा वेतन, काम करने का अच्छा माहौल, विदेश जाने के खूब अवसर, स्वरोजगार की संभावना है। होटल उद्योग में बतौर प्रशिक्षु से प्रबंधक तक न जाने कितने अवसर हैं, जहां से अपने करियर की राहें आसानी से तय की जा सकती हैं। यूं तो होटल उद्योग में प्रबंधक, फ्रंट ऑफिस/रिसेप्शनिस्ट, फूड एंड बेवरेज, हाउसकीपिंग/बुक कीपिंग, काउंटर सर्विस, मार्केटिंग आदि कई तरह के विभाग हैं, लेकिन इनमें फ्रंट ऑफिस मैनेजर एक अहम विभाग होता है।

फ्रंट ऑफिस

फ्रंट ऑफिस व्यवसाय से जुड़ा शब्द है, जो किसी कंपनी के उस विभाग को इंगित करता है, जो ग्राहकों के सीधे संपर्क में आता है। इसमें मार्केटिंग, सेल्स और सर्विस से जुड़े लोग भी शामिल होते हैं। फ्रंट ऑफिस होटल में आने वाले अतिथियों का स्वागत करता है, उनसे मिलता है, उनका उचित अभिवादन करता है, उनका रिजर्वेशन करता है, उनके चेक इन और चेक आउट की व्यवस्था देखता है, सुरक्षा विभाग व अन्य को चाबियां सौंपता है व वापस लेता है, अतिथियों को संदेश देता है और पैसे का हिसाब रखता है।

कार्य प्रकृति

फ्रंट ऑफिस हर उस काम को करने में तत्पर होता है, जिससे ग्राहक यानी अतिथियों को हर तरह से संतुष्ट किया जा सके। होटल के मानकों का पालन करते हुए अपनी सेवा से संतुष्ट करने में फ्रंट ऑफिस अपनी उपयोगिता साबित करता है। इस विभाग के लिए एक प्रबंधक नियुक्त होता है, जो फ्रंट ऑफिस ऑपरेशन देखता है और पूरे बिजनेस प्लान के अनुसार हर काम को व्यवस्थित रखता है।

टच स्क्रीन का रखें खास ख्याल

अब दौर टच स्क्रीन फोन का है। इनकी किफायती कीमत और लुभावने फीचर्स के चलते लोगों, विशेषकर युवा वर्ग में इन्हें लेकर खासा उत्साह देखा जाता है। लेकिन ये टच स्क्रीन देखने में जितने खूबसूरत और स्टाइलिश होते हैं, इनकी सुरक्षा को लेकर भी उतना ही अधिक सजग रहने की जरूरत होती है।

टच स्क्रीन फोन की स्क्रीन अगर सही तरीके से काम न करे तो दुख होना स्वाभाविक है। आइए जानें कैसे आप अपने टच फोन की स्क्रीन की सही देखभाल कर सकते हैं, ताकि यह लंबे समय तक सुरक्षित रह सके।

जेब में सही तरीके से रखें

टच स्क्रीन फोन बहुत नाजुक होते हैं और इसलिए इन्हें सही तरीके से रखना बेहद जरूरी होता है। अगर आपके पास बड़ी स्क्रीन का टच स्क्रीन फोन है तो उसे अपनी पैंट की अगली या पिछली जेब में न रखें। ऐसा करने से स्क्रीन के किसी खास हिस्से पर अतिरिक्त दबाव पडम्ता है, जिससे वह हिस्सा काम करना बंद कर देता है।

स्क्रीन प्रोटेक्टर है जरूरी

अपने फोन की स्क्रीन को स्क्रेच से बचाने के लिए उस पर अच्छी क्वालिटी का स्क्रीन प्रोटेक्टर लगाएं। इससे फोन की स्क्रीन लंबे समय तक सुरक्षित बनी रहेगी। हां, स्क्रीन प्रोटेक्टर सही आकार का होना चाहिए।

तर्जनी का इस्तेमाल करें

अपने फोन की स्क्रीन पर काम करते समय अपने तर्जनी (अंगूठे के साथ वाली उंगुली) का इस्तेमाल करें। किसी भी सूरत में नाखूनों से काम न करें, क्योंकि इससे स्क्रीन पर निशान पड़ने की संभावना रहती है।

ध्यान से करें साफ

अगर स्क्रीन गंदी हो गई है तो उसे साफ करने के लिए सॉफ्ट टिश्यू पेपर या साफ कपड़े का इस्तेमाल करें। स्क्रीन को साफ करते समय उस पर अधिक दबाव न डालें।

टीवी से रखें दूर

अपने फोन को चुंबकीय क्षेत्र वाले उपकरणों, जैसे रेडियो और टीवी आदि से दूर रखें। फोन को कवर में डाल कर ही रखें। कवर ऐसा होना चाहिए, जिसमें फोन आराम से आ जाए। इसके साथ ही इस बात का भी ध्यान रखें कि आपके फोन की स्क्रीन पर लगातार किसी चीज का दबाव नहीं पड़ रहा हो।

सूर्य की सीधी रोशनी से बचाएं

बेहतर रहेगा अगर आप अपने फोन की स्क्रीन पर सूर्य की सीधी रोशनी न पड़ने दें। अगर कभी फोन को धूप में निकालने की जरूरत भी हो तो उसे ऐसे इस्तेमाल करें कि सीधी धूप उस पर न पड़े।

धरती का एक अजूबा मृत सागर

क्या तुम जानते हो कि मृत सागर का नाम मृत सागर क्यों पड़ा? दरअसल इसका पानी इतना अधिक खारा है कि इसमें कोई जीव जीवित ही नहीं रह पाता। पर इसकी खासियत है कि इसके पानी से कई तरह की औषधियां भी बनती हैं और कोई इसमें डूबता भी नहीं।

तुम्हें मालूम ही है कि दुनियाभर के ज्यादातर समुद्रों का पानी खारा या नमकीन होता है। इससे नदियों के पानी की तुलना में समुद्र के नमकीन पानी का घनत्व यानी डेंसिटी बढ़ जाती है। यह नदियों के पानी से ज्यादा भारी होता है। समुद्री पानी में मौजूद नमक (सोडियम और मैग्नीशियम) औसतन एक घन फुट के लिए एक किलोग्राम होता है। पर तुम्हें यह जानकर हैरत होगी कि डेड सी या मृत सागर और अमेरिका की ग्रेट साल्ट लेक का पानी साधारण समुद्री पानी से भी तकरीबन 6 से 7 गुना ज्यादा खारा है। मृत सागर का खारा पानी नीचे की ओर बढ़ता है। इस खारे पानी का भार इतना ज्यादा है कि तुम इस पानी में सीधे लेट जाओ तो डूब नहीं सकते और बिना किसी डर के आसानी से तैर सकते हो। मृत सागर की इस खूबी और उसके आसपास फैले सौंदर्य की वजह से उसे 27 में 'विश्व के सात अजूबे (7 न्यू वंडर्स इन द वर्ल्ड)' में चुनी गई 28 जगहों की सूची में शामिल किया गया था। पर इसके पक्ष में ज्यादा वोट नहीं मिल पाने से इसे दुनिया के सात अजूबों में शामिल नहीं किया जा सका। मृत सागर इजरायल और जॉर्डन के बीच स्थित है। यह अरबी झील के रूप में जाना जाता है। मृत सागर धरती के न्यूनतम बिंदु पर है। यह सागर सबसे कम जगह में फैला है।

कश्मीर में अब नहीं आएगा दूसरा गिलानी

बेटे कर चुके किनारा, अन्य समर्थक भी काट रहे कन्नी

श्रीनगर (,tsalh)A क्या कश्मीर में नया गिलानी आएगा, यह सवाल कश्मीरी अलगाववाद का चेहरा बन चुके सैयद अली शाह गिलानी की मौत के बाद एक बार फिर पैदा हो गया है। अलगाववादी नेता के सियासी वारिसों में उनके दो बेटों, दामाद के अलावा उनके करीबी रहे गुलाम नबी सुमजी, कट्टरपंथी मसर्रत आलम, कश्मीर बार एसोसिएशन के पूर्व चेयरमैन मियां क्यूम, आजीवन कारावास की सजा काट रहे डा कासिम फख्तू और पाकिस्तान में बैठे सैयद अब्दुल्ला गिलानी के नाम लिए जा रहे हैं। पर यह साफ है कि आज के हालात में उसका अधिक मायना नहीं है। कश्मीर में हालात क्या बदले, गिलानी के बेटों समेत अन्य प्रमुख रिश्तेदार हुर्रियत की अलगाववादी सियासत से कन्नी काट रहे हैं या फिर कश्मीर को हिंसा की आग में धकेलने की साजिशों की सजा भुगत रहे हैं।

वर्ष 218 में जब मोहम्मद अशरफ सहराई को गिलानी ने तहरीक-ए-हुर्रियत की कमान सौंपी थी, उस समय यह माना गया था कि सहराई ही उनकी अलगाववादी सियासत को आगे ले जाएंगे। दोनों पुराने दोस्त थे। बाद में दोनों के बीच मतभेद भी पैदा हो गए और सहराई व गिलानी के बीच 219 के बाद कोई बातचीत नहीं हुई। सहराई का भी इसी वर्ष पांच मई को निधन हो चुका है।

कट्टरपंथी नेता के बड़े पुत्र डा नईम गिलानी 21 में जब पाकिस्तान से लौटे थे तो उस समय कहा गया था कि वह पिता की सियासी विरासत को संभालेंगे। इसे लेकर हुर्रियत के विभिन्न घटकों में ही नहीं तहरीक-ए-हुर्रियत कश्मीर में भी बवाल हुआ था। इसके अलावा खुद गिलानी के घर में भी कलह शुरू हो गई थी। फिलहाल कश्मीर विश्वविद्यालय में कार्यरत उनके छोटे बेटे नसीम गिलानी की भी अलगाववादी सियासत में सक्रियता देखी गई। इसके बावजूद कभी भी गिलानी उसे आगे नहीं बढ़ा पाए और उसे सोपोर में एक ट्रस्ट और स्कूल की जिम्मेदारी सौंप दी। नईम गिलानी को लेकर पैदा हुए विरोध को देखते हुए उन्होंने उसे भी लो प्रोफाइल ही रहने का निर्देश दिया था।

टेरर फंडिंग पर जब राष्ट्रीय जांच एजेंसी सख्त हुई तो गिलानी के दोनों पुत्र भी घेरे में आ गए। उनसे पूछताछ भी हुई और कहा जाता है कि दोनों ने अलगाववादी सियासत से दूर रहने का यकीन दिलाते हुए अपनी जान बचाने का प्रयास किया है। इसके अलावा बीते वर्ष जब गिलानी ने कट्टरपंथी हुर्रियत कांफ्रेंस को गुडबाय बोला था तो उसके बाद से कभी भी उनके बेटों ने अलगाववादी सियासत पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। गत दिनों उन्होंने अपने घर के बाहर लगे तहरीके हुर्रियत कश्मीर व हुर्रियत कांफ्रेंस के बोर्ड को भी हटा दिया था। इससे साफ हो गया कि वह अब अलगाववादी सियासत से कोई सरोकार नहीं रखना चाहते। अलगाववादी सियासत पर नजर रखने वाले एजाज ने कहा कि जिस तंजीम को गिलानी ने खड़ा किया, उसी तंजीम का बोर्ड उसके बेटे अपने घर से हटाएं, उसका कार्यालय बंद करें और यह सब गिलानी के जीते जी हुआ है। बेशक गिलानी उस समय बोलने की स्थिति में नहीं थे,लेकिन इससे पता चलता है कि बेटों ने बाप की अलगाववादी सियासत से तौबा करने का फैसला किया है, क्योंकि वह जानते हैं ऐसा न करने पर उन्हें कश्मीरी नौजवानों के खून का हिसाब देना पड़ेगा, एनआइए उन्हें तिहाड़ ले जाएगी।

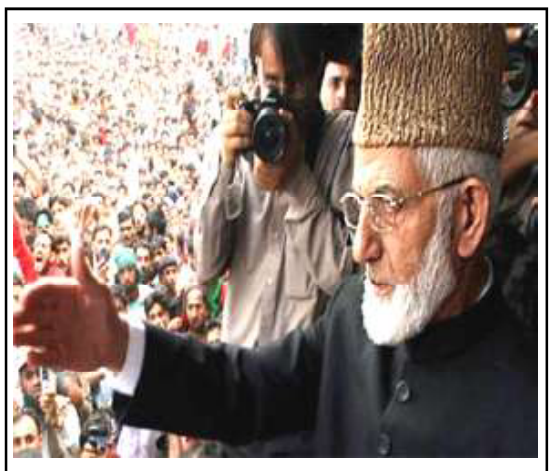

सैयद अली शाह गिलानी

गिलानी के उत्तराधिकारियों में उनके सबसे बड़े दामाद अल्ताफ शाह का नाम भी शामिल रहा है। वह करीब 45 साल से गिलानी के साथ जुड़े हुए हैं। वर्ष 23 के बाद से वही कट्टरपंथी हुर्रियत और तहरीक-ए-हुर्रियत के विभिन्न मामलों की देखभाल करने के अलावा पैसे का हिसाब किताब भी देख रहे थे। फिलहाल, तिहाड़ में बंद अल्ताफ शाह उर्फ फंतोश बाहर आने की स्थिति में नहीं है। उन पर 216 के हिंसक प्रदर्शनों के दौरान पीडीपी की युवा इकाई के नेता वहीद उर रहमान परा से पांच करोड़ की राशि लेने का भी आरोप है। परा भी इस समय जेल में ही है। अल्ताफ शाह की बेटी रुवा शाह जरुर इंटरनेट मीडिया पर अपने नाना और पिता की अलगाववादी सियासत को जिंदा रखने का प्रयास करती नजर आती है। फिलहाल, वह तुर्की में है।

कश्मीर में अलगाववादी सियासत में अहम भूमिका निभाने वाले गिलानी के उत्तराधिकारियों की कतार में कश्मीर बार एसोसिएशन के पूर्व चेयरमैन मियां क्यूम का नाम भी करीब दो साल पहले तक खूब चला। पांच अगस्त 219 के बाद वह पूरी तरह बदल गए। टेरर फंडिंग, हिजबुल मुजाहिदीन के साथ करीबी रिश्तों, एलएलबी की विवादास्पद डिग्री समेत कई मामलों की तलवार उन पर लटक रही है। जम्मू कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम लागू होने के बाद वादी में उपजे हालात में उन्हें भी गिरफ्तार किया गया था। वह पीएसए के तहत बंद रहे और जब छूटे तो उन्होने एक तरह से सियासत से किनारा कर लिया है। वह कश्मीर बार एसोसिएशन की गतिविधियों से भी लगभग गायब हो चुके हैं। दुख्तरान-ए-मिल्लत की अध्यक्ष आसिया अंद्राबी के पति डा कासिम फख्तू को भी उनका उत्तराधिकारी गिना जाता रहा है। कई बार कहा गया कि वह कट्टरपंथी हुर्रियत की कमान संभालेंगे,लेकिन वह आजीवन कारावास काट रहे हैं। इसके अलावा उम्र और स्वास्थ्य भी उनके साथ नहीं है।

पंजशीर घाटी पर कब्जे को लेकर तेज हुई लड़ाई

तालिबान और नार्दर्न एलायंस दोनों ने किए भारी नुकसान पहुंचाने के दावे

काबुल (,tsalh)।अफगानिस्तान में पंजशीर घाटी पर कब्जे को लेकर तालिबान और नार्दर्न एलायंस के बीच लड़ाई तेज हो गई है। दोनों ही पक्षों ने दुश्मन का भारी नुकसान करने का दावा किया है। तालिबान ने कहा है कि उसने 11 चौकियों पर कब्जा कर 34 एलायंस लड़ाकों को मार दिया है। पंजशीर को लेकर तालिबान के नेता मुल्ला अमीर खान मोटाकी और नार्दर्न एलायंस के नेताओं के बीच चल रही वार्ता विफल होने के बाद लड़ाई फिर छिड़ गई है।

नार्दर्न एलायंस ने कहा है कि पंजशीर घाटी पर तालिबान कब्जा नहीं कर सकेगा। एलायंस ने दावा किया पिछले 24 घंटे में उनके लड़ाकों ने तालिबान को भारी नुकसान पहुंचाया है और उनको पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया है। इधर स्पुतनिक को तालिबान के प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने बताया कि नार्दर्न एलायंस के 34 सदस्यों को मार दिया गया है। इनकी 11 सुरक्षा चौकियों पर कब्जा कर लिया गया है। हम तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

अफगानिस्तान के पूर्व उपराष्ट्रपति और नार्दर्न एलायंस के साथ मिलकर पंजशीर में तालिबान से मुकाबला कर रहे अमरुल्लाह सालेह ने कहा है कि हम हम अफगान नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करेंगे। उन्होंने तालिबान से सवाल पूछा, यदि देश को आप पर जरा भी विश्वास है तो सीमाओं पर अफगान नागरिकों की भीड़ क्यों लगी हुई है।

अफगानिस्तान में तालिबान का राज आने के बाद महिलाएं सबसे ज्यादा भयभीत हैं। जगह-जगह महिलाओं के साथ घटनाएं हो रही हैं। इन सबके बीच नई सरकार के गठन से पहले हेरात में अपनी जान जोखिम में डालकर तमाम महिलाओं ने गवर्नर कार्यालय के सामने प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारी महिलाओं ने मांग की कि नई सरकार में उनकी भी राजनीतिक भागेदारी हो। यही नहीं उनको कैबिनेट, लोया जिरगा और एल्डर कमेटियों में स्थान दिया जाए।

तालिबान राज में महिलाओं ने हेरात में किया प्रदर्शन

काबुल (,tsalh)।अफगानिस्तान में तालिबान का राज आने के बाद सबसे ज्यादा संकट महिलाओं के अधिकारों पर है। जगह-जगह महिलाओं के साथ घटनाएं हो रही हैं। इन सबके बीच नई सरकार के गठन से पहले हेरात में अपनी जान जोखिम में डालकर तमाम महिलाओं ने गवर्नर कार्यालय के सामने प्रदर्शन किया। उनकी मांग थी कि सरकार में महिलाओं की पर्याप्त राजनीतिक भागेदारी हो। उन्हें कैबिनेट, लोया जिरगा और एल्डर कमेटियों में स्थान दिया जाए। रैली का आयोजन करने वाली फ्रीबा काबरजानी ने बताया कि अफगान महिलाओं ने बीस साल में जो कुछ भी हासिल किया है, उसके लिए उन्होंने बहुत त्याग किया है। इन बीस सालों में महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ी हैं। ऐसी स्थिति में तालिबान को महिला अधिकारों की सुरक्षा का आश्वासन देते हुए सत्ता में भी हिस्सेदारी देनी चाहिए। हम चाहते हैं कि पूरी दुनिया हमें सुने और हमारे अधिकार सुरक्षित रहें।

प्रदर्शनकारी महिलाओं का कहना था कि हम अफगानिस्तान की सभी महिलाओं की तरफ से अपनी बात तालिबान तक पहुंचा रहे हैं।

चीनी नीति के खिलाफ साहस और दृढ़ संकल्प दिखा रहे तिब्बती % पेनपा सेरिंग

धर्मशाला (,tsalh)।पिछले कुछ सालों में चीनी सरकार द्वारा तिब्बती लोगों पर किए गए अत्याचारों के बारे में निर्वासित तिब्बती सरकार के अध्यक्ष पेन्पा त्सेरिंग ने प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि तिब्बत के लोगों ने क्षेत्र की पहचान को खत्म करने की चीन की निरंतर कोशिशों के सामने साहस और दृढ़ संकल्प बनाए रखा है।

तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा और 8, तिब्बतियों के भारत में निर्वासन के बाद 196 में तिब्बती संसद की स्थापना की गई थी। तिब्बती संसद की स्थापना की 61वीं वर्षगांठ के अवसर पर पेन्पा त्सेरिंग ने यह टिप्पणी की। 3 फरवरी, 196 को राष्ट्रपति ने कहा था कि निर्वासित तिब्बती नागरिकों के प्रतिनिधि पहली बार बोधगया में एकत्र हुए और न-ग्येन चेन्मो (महान शपथ) ली। दलाई लामा के मार्गदर्शन में एकता और सहयोग बनाने के लिए समर्पण और बलिदान का वचन दिया था।

पेन्पा त्सेरिंग ने कहा कि उस समय के दौरान, चीनी सरकार ने तिब्बती लोगों के शांतिपूर्ण विरोधों के क्रूर दमन की अपनी नीति का अनुसरण किया था। चीन की नीतियों ने तिब्बत में त्रासदी लाई क्योंकि उस समय तिब्बतियों ने पृथ्वी पर नर्क का अनुभव किया था। 195 में चीनी सैनिकों ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया और बाद में, 1959 में तिब्बती विद्रोह में तिब्बती निवासियों और चीनी सेनाओं के बीच हिंसक संघर्ष हुए।

पेन्पा त्सेरिंग ने बताया कि हम अपना 61वां लोकतंत्र दिवस मना रहे है, हम तिब्बत में अपने हमवतन लोगों को हार्दिक बधाई देते हैं। तिब्बती लोगों ने तिब्बत की पहचान को खत्म करने की चीन की निरंतर नीति के सामने साहस और दृढ़ संकल्प बनाए रखा है। वे सभी तिब्बत के धर्म, संस्कृति, भाषा और परंपरा की रक्षा के लिए चौतरफा प्रयास कर रहे हैं।

इस समय धर्मशाला में 1, से अधिक तिब्बती रहते हैं और दुनिया भर में लगभग 16, तिब्बती रह रहे हैं। त्सेरिंग ने तिब्बती नागरिकों से आग्रह किया है कि वह अपना दृढ़ संकल्प न खोएं। 213 में राष्ट्रपति बनने के बाद से, शी जिनपिंग ने तिब्बत पर सुरक्षा नियंत्रण बढ़ाने की एक दृढ़ नीति अपनाई है। बीजिंग बौद्ध भिक्षुओं और दलाई लामा के अनुयायियों पर नकेल कसता रहा है। अमेरिका विभिन्न प्लेटफार्मों पर तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन के मुद्दे को उठाता रहा है।

सामूहिक समारोहों के लिए पूर्ण टीकाकरण जरूरी

◆सरकार ने कहा- दूसरी लहर अभी खत्म नहीं, घर में मनाएं त्योहार

नई दिल्ली (,tsalh)।कोरोना काल में सामूहिक समारोहों को हतोत्साहित किया जाना चाहिए लेकिन यदि इसमें भाग लेना जरूरी हो तो इसके लिए पूर्ण टीकाकरण एक पूर्व अपेक्षा होनी चाहिए। केंद्र सरकार ने लोगों से जागरूकता लाने और कोविड प्रोटोकाल का पालन करने का आग्रह किया है। एक प्रेस कांफ्रेंस में सरकार की ओर से चेतावनी दी गई कि देश में कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर अभी खत्म नहीं हुई है। सरकार ने कहा है कि भले ही साप्ताहिक पाजिटिविटी दर में समग्र रूप से गिरावट का रुख दिख रहा हो लेकिन हालात बहुत बेहतर नहीं हैं।

देश में हालात बेहतर नहीं

ऐसी स्थिति में लोगों को घर पर त्योहार मनाना चाहिए और कोविड प्रोटोकाल का पालन करना चाहिए। सभी को टीकाकरण भी अपनाना चाहिए। सरकार ने कहा कि देश के 39 जिलों ने 31 अगस्त को समाप्त सप्ताह में 1 फीसद से अधिक साप्ताहिक कोविड पाजिटिविटी दर दर्ज की जबकि 38 जिलों में यह 5 से 1 फीसद के बीच थी।

दावा किया गया कि भारत की 16 फीसद वयस्क आबादी को कोरोना वैक्सीन के दोनों डोज मिल गए हैं। वहीं 54 फीसद को कम से कम एक डोज मिल गई है। सरकार ने कहा, सिक्किम, दादरा और नगर हवेली और हिमाचल प्रदेश में सभी वयस्क आबादी को वैक्सीन की कम से कम एक डोज मिली है।

करीब दो माह के अंतराल के बाद कोरोना के मामलों में तेज वृद्धि देखने को मिली है। पिछले 24 घंटों में कोरोना के 47,92 नए मामले सामने आने से कुल संक्रमितों की संख्या बढ़कर 3,28,57,937 हो गई है। पिछली बार 63 दिन पूर्व पहली जुलाई को 48,786 मामले सामने आए थे। देश में सक्रिय मामलों की संख्या बढ़कर 3,89,583 हो गई है।

केरल में संभल नहीं रहे हालात

नए मामलों में 32,97 केस अकेले केरल के हैं। केरल में अब तक 41 लाख से अधिक लोग संक्रमित हो चुके हैं। केरल में कोरोना के हालात फिलहाल काबू होते नजर नहीं आ रहे हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने गुरुवार को कहा कि केंद्र द्वारा अब तक राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को 64.65 करोड़ से अधिक टीके की डोज मुफ्त और प्रत्यक्ष राज्य खरीद श्रेणी के तहत मुहैया कराई जा चुकी है। राज्यों के पास 4,78,94,3 अप्रयुक्त डोज उपलब्ध हैं। मंत्रालय के बयान में कहा गया कि राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए वैक्सीन उपलब्धता बढ़ाई गई है ताकि वे टीकाकरण अभियान तेज कर सकें।

सीएम धामी शुक्रवार से श्रीनगर से करेंगे चुनाव प्रचार का श्रीगणेश

श्रीनगर (सू. वि.)। पौड़ी के श्रीनगर गढ़वाल में शुक्रवार 3 सितंबर से मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी 222 विधानसभा चुनाव का बिगुल फूंकने जा रहे हैं। इसके तहत भाजपा कार्यकर्ताओं से लेकर स्थानीय प्रशासन ने अपनी सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। अपने प्रस्तावित कार्यक्रम के मुताबिक मुख्यमंत्री धामी 3 सितंबर को सुबह 11 बजे श्रीनगर जीवीके हेलीपैड पहुचेंगे। इसके बाद सीएम धामी भाजपा युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं के साथ बाइक रैली में शामिल होंगे। इस रैली के जरिए मुख्यमंत्री 11 स्थानों पर कार्यकर्ताओं से भेंट भी करेंगे। उनके स्वागत का भी कार्यक्रम भाजपा द्वारा प्रस्तावित किया गया है। गुरुवार को भाजपा के प्रदेश महामंत्री कुलदीप कुमार श्रीनगर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के कार्यक्रम की सभी तैयारियां का अंतिम जायजा लिया। मुख्यमंत्री श्रीनगर में जन आशीर्वाद रैली के जरिए गढ़वाल में अपनी पहली रैली को भी संबोधित करेंगे। इस दौरान सीएम धामी के साथ कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज, हरक सिंह रावत, कैबिनेट मंत्री धन सिंह रावत, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन कौशिक, गढ़वाल सांसद तीरथ सिंह रावत समेत कई विधायक भी मौजूद रहेंगे।श्रीनगर के बाद 6 सितंबर को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी अल्मोड़ा में जन आशीर्वाद रैली में भी हिस्सा लेंगे। पूरे प्रदेश में 11 जगह ये जन आशीर्वाद रैली निकाली जाएगी। प्रदेश महामंत्री कुलदीप कुमार ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी इस रैली के जरिए अपने चुनाव प्रचार का आगाज करेगी. चुनाव के लिए बेहद कम समय रह गया है। इस रैली के जरिए जहां जनता से आशीर्वाद लिया जाएगा। वहीं, दूसरी तरफकेंद्र और राज्य सरकार की विकास योजनाओं को भी जनता के बीच रखने का कार्य भाजपा करने जा रही है। 217 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी को बंपर मैंडेट मिला था। राज्य की 7 में से 57 सीटों पर भगवा का परचम लहराया था। कांग्रेस को सिर्फ 11 सीटें हासिल हुई थीं. इस बार आम आदमी पार्टी भी मैदान में है।

देवप्रयाग में दैनिक भोगी कर्मियों का अनिश्चितकालीन अनशन

टिहरी (संवाददाता)। लंबित मांगों को लेकर जल संस्थान दैनिक भोगी कर्मचारी संगठन ने विभाग के खिलाफमोर्चा खोल दिया है।

गुस्साए कर्मचारियों ने ब्लॉक मुख्यालय हिंडोलाखाल में सहायक अभियंता का घेराव करते हुए अनिश्चितकालीन क्रमिक अनशन शुरु कर दिया। संगठन ने मांगों पर कार्रवाई होने तक आंदोलन जारी रखने की बात कही।

बुधवार को संगठन अध्यक्ष प्रेम सिंह पंवार व सचिव गंभीर सिह बिष्ट की अगुवाई में जल संस्थान के दैनिक भोगी कर्मचारियों ने विभाग की ओर से उनके साथ मानदेय व नौकरी को लेकर किये जा रहे भेदभाव पर गहरा रोष जताते नारेबाजी की।

अध्यक्ष प्रेम सिंह के अनुसार जलनिगम से जलसंस्थान को हस्तांतरित योजनाओ से जुड़े दैनिक भोगी कर्मचारी आज भी मुश्किलें झेलने को मजबूर हैं। कोटेश्वर झण्डीधार, बगवान हिंडोलाखाल, हिसरियाखाल आदि पेयजल योजनाओ से जुड़े दैनिक भोगी कर्मचारी आज भी न्याय के लिए भटक रहे हैं।

mUgksaus कहा कि साल 216-17 में विभाग ने आउट सोर्स से मजदूरों की लगाकर उनके हक को छीना है। जबकि सन 2 से वह पेयजल योजनाओं से जलापूर्ति का काम पूरी निष्ठा से करते आ रहे हैं। वर्तमान में उन्हे कई माह से मानदेय नही मिलने से वह आर्थिक संकट झेलने को मजबूर बने हैं। दैनिक भोगी मजदूरों की माँगो के समर्थन में ब्लॉक प्रमुख सूरज पाठक, पूर्व प्रमुख जयपाल पंवार व मगन सिंह बिष्ट, ग्राम प्रधान सगठन अध्यक्ष सोबन सिंह चौहान, समाज सेवी रजनीशकांत तिवारी आदि भी मौके पर पहुंचे।

संगठन ने मांगो को लेकर जल संस्थान अधिकारियों की ज्ञापन भी सौंपा।

नांदलस्यूं के राजस्व उपनिरीक्षक का स्पष्टीकरण तलब

पौड़ी। नान्दलस्यूं पट्टी के ग्राम कलढुंग में एक व्यक्ति द्वारा बिना अनुमति के जेसीबी का प्रयोग कर सरकारी भूमि को खुर्द-बुर्द किए जाने के मामले में कार्रवाई नहीं करने पर एसडीएम ने राजस्व उप निरीक्षक नान्दलस्यूं-तीन का स्पष्टीकरण तलब किया है।

बीते 3 अगस्त को प्रभारी राजस्व निरीक्षक पौड़ी और उप वन क्षेत्राधिकारी सिविल सोयम ने ग्राम कलढुंग में हो रहे अवैध अतिक्रमण की जांच की। जांच में यह बात सामने आई कि एक स्थान में बिना अनुमति के जेसीबी मशीन का प्रयोग कर भूमि को समतल किया गया है। इसमें कई चीड़ के पेड़ों को क्षति पहुंचाते हुए काटा गया है।

देवस्थानम बोर्ड के समिति के अध्यक्ष को कैबिनेट मंत्री का दर्जा

देहरादून (सू. वि.)। मुख्यमंत्री ने देवस्थानम बोर्ड के सम्बन्ध में गठित समिति के अध्यक्ष को कैबिनेट मंत्री का दर्जा देने की स्वीकृति दी।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने देवस्थानम बोर्ड के सम्बन्ध में सभी सम्बन्धित पक्षों से वार्ता कर इस सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट देने के लिये गठित समिति के अध्यक्ष मनोहरकान्त ध्यानी को कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिये जाने की स्वीकृति प्रदान की है। मुख्यमंत्री ने अपर सचिव धर्मस्व को समिति का सदस्य सचिव नामित किये जाने के भी निर्देश दिये।

भाजपा के काले कारनामों का पर्दाफाश करेगी कांग्रेस की परिवर्तन यात्रा: धीरेंद्र प्रताप

देहरादून (संवाददाता)। उत्तराखंड कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता एवं उपाध्यक्ष धीरेंद्र प्रताप ने कहा है कि कांग्रेस की 3 सितंबर से खटीमा शहीद स्मारक से शुरू होने वाली परिवर्तन यात्रा भाजपा के काले कारनामों का पर्दाफाश करने का काम करेंगी।

प्रताप यहां पिछले 3 दिनों में खटीमा ,देहरादून और उसके बाद आज मसूरी के शहीद स्मारकों पर शहीदों को श्रद्धांजलि करने के उपरांत तीन दिवसीय दौरे के बाद कांग्रेस मुख्यालय में पत्रकारों से बात कर रहे थे । धीरेंद्र प्रताप ने कहा कि भाजपा के पाप का घड़ा भर चुका है और अब जब कांग्रेस 3 सितंबर से खटीमा शहीद स्मारक से अपनी शुरू करेगी और पार्टी के चारों दिग्गज नेता पार्टी प्रभारी देवेंद्र यादव कांग्रेस महासचिव एवं अभियान समिति के अध्यक्ष हरीश रावत पार्टी अध्यक्ष गणेश गोदियाल और प्रतिपक्ष के नेता प्रीतम सिंह जब जनता में भाजपा सरकार के भ्रष्टाचार और निकम्मे पन के विरुद्ध जब आग उगलेंगे, तब भाजपा का क्या हाल होगा यह देखने लायक होगा। धीरेंद्र प्रताप ने कहा यद्यपि नए मुख्यमंत्री ने जनता के हित में कई घोषणाएं की हैं लेकिन उनका पिछले 2 साल का उत्तराखंड का यह अनुभव रहा है कि चुनाव से पहले की गई घोषणाएं कोरे वायदो से ज्यादा कुछ नहीं होते। उन्होंने कहा घोषणा है तभी सही साबित होती हैं जब उन पर साथ साथ में जिओ (सरकारी आदेश) निकाले जाते हैं और साथ ही उन कार्यों पर किए जाने हेतु धन की व्यवस्था की जाती है।

दंपती को बंधक बनाकर बदमाशो ने हथियारों की नोक पर की लाखों की लूट

हरिद्वार (संवाददाता)। हरिद्वार जिले के पथरी थाना क्षेत्र के शेरपुर गाँव में बीती रात आधा दर्जन अज्ञात नकाबपोश बदमाशों ने घर में सो रहे दंपती परिवार को बंधक बनाकर हथियारों की नोक पर लाखों के जेवरात व नकदी लूटकर ले गए। वारदात के बाद नकाबपोश लुटेरो ने दंपति परिवार को घर में ही बंद कर मौके से फरार हो गये। सूचना के बाद पुलिस मामले की जांच में जुटी है। पुलिस के अनुसार शेरपुर गांव में आधा दर्जन अज्ञात लोग खाना मांगने के बहाने घर के अन्दर दाखिल हुए जिसके बाद उन्होंने खाना खाया और उसके पश्चात दंपति परिवार को घर में ही बंधक बना लिया। बदमाशो ने परिवार के सभी सदस्यों के मोबाइल फ़ोन छीनकर अपने कब्जे में ले लिये उसके बाद उन्होंने इस लूट की घटना को अंजाम दिया। पीड़ित परिवार के मुताबिक 425 रूपये नकदी तथा घर के बक्से में रखे लाखो के जेवरात आदि सभी अपने साथ लूटकर ले गये। ग्रामीणों से मिली जानकारी के अनुसार बदमाश खेतो के रस्ते से गाँव में दाखिल हुए और इस घटना को अंजाम दिया पीड़ित परिवार की ओर से परिवार के बेटे रोहित कुमार पुत्र सुक्कड़ के द्वारा पुलिस को तहरीर दी गई है।

ऑल वेदर रोड प्रभावितों ने सरकार पर लगाया उपेक्षा का आरोप

टिहरी (संवाददाता)। चंबा ब्लॉक के तीन पट्टियों के ऑल वेदर रोड प्रभावित ग्रामीणों ने सरकार पर उपेक्षा का आरोप लगाते हुए क्षतिग्रस्त परिसंपत्तियों का मुआवजा दिए जाने की मांग की है। उन्होंने चंबा धरासू मोटरमार्ग भू संघर्ष समिति का गठन करते हुए सरकार से मांगों पर शीघ्र उचित निर्णय लिए जाने की भी मांग की है। बैठक में ग्रामीणों ने कहा कि ऑल वेदर रोड निर्माण के तहत डंडासली से रामगढ़ तक के प्रभावितों की उपेक्षा की जा रही है। प्रभावितों को उनकी क्षतिग्रस्त परिसंपत्तियों का मुआवजा नहीं दिया जा रहा है। प्रभावितों ने दुकान व भवनों का सर्किल रेट बढ़ाए जाने, कास्तकारों के चारा पत्ती, फलदार पेड़ों व डंपिंग जोन का मुआवजा देने, प्रभावित गांवों की पेयजल व संपर्क मार्ग शीघ्र निर्माण करने, 24 मीटर रोड कटने पर भूघंसाव में आने वाली भूमियों का मुआवजा देने तथा रोड के लिए सवे किए जाने वाली समिति में स्थानीय जनप्रतिनिधियों को भी शामिल करने की मांग की है। इस मौके पर प्रभावितों ने चंबा-धरासू मोटरमार्ग भू-संघर्ष समिति का भी गठन किया। जिसमें दर्मियान सिंह सजवाण अध्यक्ष, सुरत तोपवाल महामंत्री, हरिप्रसाद सकलानी सचिव, अतम सिंह कठैत उपाध्यक्ष, सुरेंद्र रावत कोषाध्यक्ष, भगवान सिंह तोपवाल को मीडिया प्रभारी चुना गया। बैठक में शूरवीर तोपवाल, राजेंद्र सिंह, दिनेश उनियाल, बरफ सिंह नेगी, युद्धवीर सिंह, बसंती सजवाण, गीता देवी, राजेंद्र प्रसाद डबराल, प्रेम सिंह, बचन सिंह आदि मौजूद रहे।

ठेकेदारों ने कम दरों का हवाला देकर टेंडरों का बहिष्कार किया

हल्द्वानी (संवाददाता)। लोनिवि हल्द्वानी डिविजन में सड़कों के काम को लेकर बुधवार को टेंडर खोले जाने थे। कांट्रेक्टर वेलफेयर एसोसिएशन ने कम दरों का हवाला देते हुए टेंडर प्रक्रिया का बहिष्कार किया। इस वजह से कालाढूंगी और लालकुआं विधानसभा क्षेत्र की 6 किलोमीटर सड़कों के करीब 11 करोड़ रुपये से होने वाले कामों के टेंडर नहीं हो पाए।संगठन के अध्यक्ष योगेश पाठक ने कहा कि विभाग द्वारा जो टेंडर निकाले गए हैं, उसमें दाम काफी कम हैं। ऊपर से विभाग क्वालिटी मेंटेन करने का दबाव बनाता है। कम दामों में क्या सड़कों पर लगाएं और क्या बचत करें। उन्होंने पुराने भुगतान न होने की बात भी कही। कहा कि जब तक रेट नहीं बढ़ाए जाते हैं, ठेकेदार किसी भी निविदा प्रक्रिया में शामिल नहीं होंगे। लोनिवि के अधिशासी अभियंता अशोक कुमार ने कम रेट में निविदा निकालने के ठेकेदारों के आरोप को गलत बताया है।

शिक्षा मंत्री के साथ वर्चुअल शैक्षिक संवाद में क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों ने की भागीदारी

पौड़ी (संवाददाता)। राजकीय इंटर कालेज कोचियार में शिक्षा मंत्री अरविंद पांडेय के साथ वर्चुअल शैक्षिक संवाद में क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों ने भागीदारी की। शिक्षा मंत्री अरविंद पांडेय द्वारा प्रदेश भर में शिक्षण संस्थानों में वर्चुअली शैक्षिक संवाद के जरिए क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों के साथ चर्चा की। राजीव नवोदय विद्यालय देहरादून से यह संवाद प्रदेश भर के राजकीय इंटर कालेजों में स्थापित 5 वर्चुअल कक्षा केंद्रों में किया गया। शिक्षा मंत्री ने अपने संबोधन में छात्र छात्राओं का नामांकन बढ़ाने पर जोर देते हुए कहा कि शीघ्र ही प्रदेश भर में 15 और विद्यालयों को अटल उत्कृष्ट विद्यालय की श्रेणी में लाया जायेगा। जीआईसी कोचियार में वर्चुअल कक्षा प्रभारी शिक्षक दिनकर रावत ने बताया कि स्कूल में ज्येष्ठ उप प्रमुख ललित पटवाल, कनिष्ठ उप प्रमुख रेखा देवी, क्षेत्र पंचायत सदस्य गीता नेगी, ग्राम प्रधान कसाना बीना रावत, ग्राम प्रधान संगलिया वल्ला महिपाल सिंह, ग्राम प्रधान पतगांव नरेन्द्रसिंह मनराल ने शिक्षामंत्री अरविंद पाँडे द्वारा वर्चुवल के माध्यम से शैक्षिक संवाद कार्यक्रम में वर्चुअल कक्षा

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक
प्रदीप चौधरी
द्वारा
एल.के प्रिटर्स,74/9,आराघर,देहरादून
से मुद्रित
व जाखन जोहड़ी रोड, पी.
ओ-राजपुर, देहरादून से प्रकाशित।
संपादकः प्रदीप चौधरी

सिटी कार्यालयः
शिवम् मार्केट, द्वितीय तल
दर्शनलाल चौक, देहरादून।
फैक्स नं०-
0135-2650558
(M) 9319700701
pagethreedaily@gmail.com
आर.एन.आई.नं0
UTTHIN\2005\15735
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून ही मान्य होगा।